ओ३म्

सत्यार्थ - सन्देश

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास

नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹ १० ७

भावाञ्जलि

यावत् कालं तु सृष्टिर्नभसि विरचिता ब्रह्मणा स्थास्यतीति,
तावत् सत्यार्थ एष भ्रम-जुड़ित मतीन् वर्त्म संदर्शीयष्यन्।
यावद् वा ग्रन्थ एष प्रथित 'नवलखा' वर्ततेऽस्यां धरायाम्,
तावद् वै 'तत्त्वबोधो' 'महल नवलखा' कीर्तिभिः स्थास्यतीहि।।

''जब तक ब्रह्मा जी के निर्मित
यह सृष्टि आकाश के अंक में
स्थित है, तब तक यह 'सत्यार्थ प्रकाश'
भ्रान्ति ग्रस्त बुद्धियों को सन्मार्ग
दिखाता रहेगा तथा जब तक यह
अमर ग्रन्थ और 'नवलखा महल'
इस भू-तल पर स्थित रहेगा,
तब तक ये स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती,
'नवलखा महल' की कीर्ति के साथ
सदैव यशस्वी हो
अमर रहेंगे''

– डॉ. विशुद्धानन्द मिश्र

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ - सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ-सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

संपादक

अशोक आर्य

कम्पयूटर एवं ग्राफिक्स

संदीप यादव

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - ११००० रु.	$ 1000
आजीवन - १००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय - ४०० रु.	$ 100
वार्षिक - १०० रु.	$ 25
एक प्रति - १० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें।
अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर
खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११३
श्रावण कृष्ण चतुर्थी
विक्रम संवत्
२०६९
दयानन्दाब्द
१८८

July - 2012

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन ३५०० रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

१५ | ये उत्थान है या पतन हो रहा है

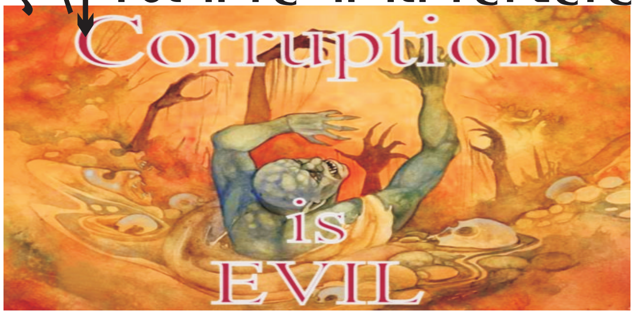

०७ नमन माता पिता को

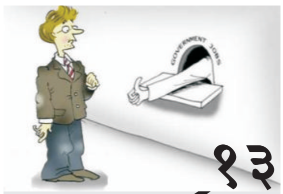

१३ मजहबी आरक्षण

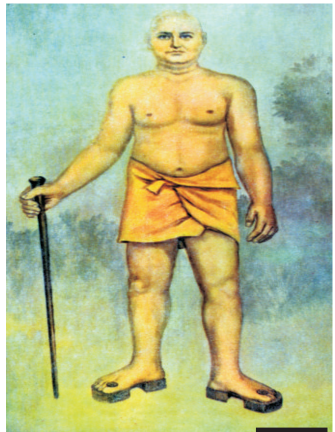

महर्षि दयानन्द होते तो २९

समाचार २३

हलचल २४

०४	वेद सुधा
१०	चरित्र निर्माण
१८	आलस्य त्याग
१६	हार की जीत
२१	पुनर्जन्म ही तो है सेवानिवृत्ति
२२	स्वास्थ्य
२५	झूठ बोलने वाला ...
२७	आओ सोचें और बदल डालें

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - १ अंक - २

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४ , ९३१४५३५३७९, ९८२९६२६७४७
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail-com,

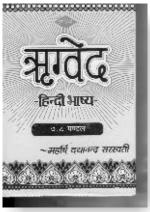

ओ३म्

वेद सुधा

प्रार्थना– सफलता और सार्थकता

यदग्ने स्यामहं त्वं त्वं वा घा स्या अहम्।
स्युष्टे सत्या इहाशिषः।। –ऋग्वेद ८.४४.२३

हे प्रकाशस्वरूप! जब मैं तू हो जाऊँ या तू मैं हो जाए तब इस संसार के तेरे सब आशीर्वाद सत्य (सफल) हो जाएँ।

प्रार्थना का महत्व

संसार में धर्मों का सबसे महत्त्वपूर्ण अङ्ग प्रार्थना है। धर्म और प्रार्थना प्रायः समानार्थक शब्द बन गये हैं। प्रार्थना धर्म की ही नहीं जीवन की भी बहुत बड़ी साधना है। यदि मनुष्य इसे ठीक प्रकार समझ जाय तो जीवन की बहुत-सी कठिनाइयों को प्रार्थना के द्वारा दूर कर सकता है। यदि कहीं किसी दिशा में मार्ग नहीं सूझ रहा, तो प्रार्थना कीजिए, मार्ग दिखाई देने लगेगा। जीवन में किसी विशिष्ट समस्या का समाधान प्राप्त नहीं हो रहा, तो सच्चे हृदय से प्रार्थना कीजिए, समाधान स्वतः प्राप्त होने लगेगा। वृद्धावस्था हो गई है, शक्तिहीनता का अनुभव होने लगा है, तो प्रार्थना से वह खोई हुई शक्ति पुनः प्राप्त हो जाएगी। प्रार्थना आशा या याचना नहीं एक बहुत बड़ी साधना है, यदि साधक इसे समझ सके और सिद्ध कर सके।

यदि ईश्वर के दर्शन अभीष्ट हैं तो ऋषि दयानन्द के शब्दों में–

'स्तुति, प्रार्थना, उपासना तीनों में ईश्वरोपासना का स्वरूप पूर्ण होता है।'
–सत्यार्थप्रकाश, सप्तमसमुल्लास

ऋषि दयानन्द स्वयं प्रार्थना के महत्त्व को जानते और अनुभव करते थे। उन्होंने प्रार्थना पर ही आर्यों के लिए एक पुस्तक लिखी, नाम है–

'आर्याभिविनय', अर्थात् आर्यों की प्रार्थना। उनका अपना जीवन कितनी ही कठिनाइयों से भरा पड़ा था, किन्तु प्रार्थना के बल से उन्होंने उन पर विजय प्राप्त की। उन्होंने वेदभाष्य किया, जहाँ नहीं सूझा वहाँ प्रार्थना से उन मन्त्रों का अर्थ- दर्शन किया। अन्य भी सभी महापुरुषों ने अपने जीवन में प्रार्थना की शक्ति से समस्याओं पर विजय प्राप्त की, वे सभी 'प्रार्थना पुरुष' थे।

प्रार्थना का स्वरूप

प्रार्थना है क्या? मनीषियों का कथन है–

'इष्टेव के सम्मुख अन्तरात्मा से सहज और स्वतन्त्ररूप से निकले हुए उद्गार ही सच्ची प्रार्थना है, न कि रटे हुए वाक्य व श्लोक।'

ऋषि दयानन्द की दृष्टि में–

'प्रार्थना, अर्थात् अपने पूर्ण पुरुषार्थ के उपरान्त उत्तम कर्मों की सिद्धि के लिए परमेश्वर से सहायता लेना'। –सत्यार्थप्रकाश, सप्तमसमुल्लास

उस सहाय के लिए साधक अपनी सीधी-सादी बोली में अपने मनोभावों के अनुसार अपने उद्गार प्रकट करता है। यह प्रार्थना हर समय हर व्यक्ति में नई-नई होती है, रटी-रटाई नहीं। किस समस्या में क्या मनोभाव उमड़ेंगे यह प्रार्थना करने वाला ही समझता है। प्रार्थना में वह मानो भगवान् से अपना सम्बन्ध जोड़कर उनसे बातें करने लगता है, जिसमें वह सब-कुछ उनसे कह सके। ठीक वैसे ही-जैसे दुःखी बेटी जब प्रथम बार पीहर लौटती है तब अपने मन की बात माँ से अकेले में कहना चाहती है। जितना अधिक दुःख, उतना ही वह एकान्त चाहती है। यही प्रार्थना में भी होता है। इसी कारण वह योग से छोटी साधना नहीं है। सफल प्रार्थना से वह जीवन में क्या कुछ नहीं प्राप्त कर लेता?

प्रार्थना के फल

ऋषि दयानन्द प्रार्थना के फलों का वर्णन करते हुए कहते हैं–

''**अभिमान का नाश, आत्मा में आर्द्रता, गुणग्रहण में पुरुषार्थ, अत्यन्त प्रीति का होना**''। ये सभी गुण मानवता के निर्माण में सोपान हैं। अभिमान मानव को सद्गुणों से विमुख करता है। अभिमान-नाश से नम्रतापूर्वक गुणी के प्रति आकृष्ट होकर गुण-ग्रहण में पुरुषार्थ करता है। यह फल तर्क और युक्तियों से नहीं अनुभव से जाना जा सकता है। ईश्वर-भक्त में झूठी अकड़ और अभिमान नहीं होता।'' - पूनाप्रवचन

सत्यार्थप्रकाश के सप्तम समुल्लास में प्रश्नोत्तर द्वारा बताया है कि प्रार्थना द्वारा निरभिमानता, उत्साह और सहाय का मिलना-इन फलों की प्राप्ति होती है। ऋषि की दृष्टि में अभिमान वह आवरक दोष है जो मनुष्य के समस्त गुणों पर आवरण डाल देता है। मनुष्य कितना ही गुणी क्यों न हो, किन्तु मन में अभिमान के उदय होते ही उसके सभी गुण ढक जाते हैं? प्रार्थना से इस दोष का निवारण कैसे होता हैं?**अभिमान मनुष्य को होता ही तब है जब वह दूसरों के गुणों को भी दोष और अपने दोषों को भी गुणों के रूप में देखने लगता है** या अपने तरीके-से सभी गुणों को विशाल रूप में और दूसरे के विशाल गुणों को अणुरूप में देखने लगता है। भर्तृहरि के शब्दों में वे सन्त धन्य हैं जो-

परगुणपरमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यं, निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः।

उन श्रेष्ठपुरुषों की गिनती अंगुलियों पर की जा सकती है जो दूसरों के अणु-तुल्य-थोड़े-से सद्गुणों को पर्वत के समान विशाल बनाकर अपने हृदय में विकसित करते हैं।

नरसी मेहता की दृष्टि में-

वैष्णव जन तो तेने कहिए जो पीड़ पराई जांणे रे। पर दुःखे उपकार करे तोय मन अभिमान न आणे दे।।

'**नेकी कर कुएँ में डाल**' के पीछे भी यही भावना है। प्रार्थना मनुष्य की दोषदर्शन की वृत्ति को पलट देती है। प्रार्थना-पुरुष को अपने गुण, कर्म व दोष अधिक अनुभव होते हैं, जिससे उसका अभिमान जम नहीं पाता। अभिमान करे भी तो किस बात का? यह रूप, ऐश्वर्य, सन्तान, पद, सुख, विद्या सभी तो उसके अपने नहीं हैं। इनका दाता और अधिष्ठाता तो कोई 'और' है, जिसने उसके कर्मों के परिणामस्वरूप थोड़ी देर के लिए कृपापूर्वक उसे प्रदान किये हैं। दूसरे की वस्तु पर उसका स्वामित्व व अधिकार कैसा? फिर वह यह भी अनुभव करता है कि ये सब परिवर्तनशील हैं। यौवन का सुन्दर रूप बुढ़ापे में बदल जाने वाला है। विद्या के दो आखर उसे विशाल ज्ञान-समुद्र के सम्मुख कौड़िया बीनने से अधिक नहीं जान पड़ते। क्या उसे पता नहीं कि ये बंगले, कार, कोठी, सम्पत्ति, सन्तति सभी तो क्षणिक हैं। यह तो थोड़ी देर के लिए उसके पास किसी की धरोहर मात्र हैं-

मा कुरु धनजनयौवनगर्वं। हरति निमेषात् कालः सर्वम्।। - मोहमुद्गर (शंकराचार्य) श्लोक ३

धन-जन-यौवन का गर्व मत करो, क्योंकि काल क्षणभर में इनको हर लेता है।

प्रार्थनाजन्य इन मानसिक भावों से अभिमान सर्वथा लुप्त हो जाता है और फिर वह उधर झाँकता भी नहीं, इसीलिए ऋषि दयानन्द अनुभवजन्य इस तथ्य को कहते हैं- '**ईश्वरभक्त में झूठी अकड़ और अभिमान नहीं होता।**'

तब वह 'अभिमान-नाश से नम्रतापूर्वक गुणी के प्रति आकृष्ट होकर गुण-ग्रहण में पुरुषार्थ करता है।'

गुण-ग्रहण में प्रयत्नशील साधक को निरभिमानी रह अपने लक्ष्य की पूर्ति में अधिक विलम्ब नहीं होता।

'यह फल तर्क और युक्तियों से नहीं अनुभव से जाना जाता है।' इस अवस्था में 'आत्मा में इतनी आर्द्रता' छा जाती है कि वह करुणा-विगलित होकर निरन्तर आँसू बहाने लगता है।

उसे संसार में कोई शत्रु दिखाई ही नहीं देता। सभी उसके अपने, मित्र और बन्धु हो जाते हैं। विश्वमैत्री की यह भावना चित्त की अत्यन्त स्वाभाविक और उदारभावना बन जाती है। ऐसा प्रसिद्ध है कि महान् सन्त रामकृष्ण परमहंस इस रूप में आँसू बहाते-बहाते मूर्छित तक हो जाते थे। यह वह दिव्य अवस्था है, जब प्रार्थना करने वाले भक्त को अपने में दोष अधिक और दूसरे में गुण-ही-गुण दिखाई देने लगते हैं। सूरदास अनुभव करते हैं-

हौं सब पतितन कौ टीको।

सन्त कबीर ने इस अवस्था में अपने दिल को टटोला तो पहले से कुछ भिन्न दिखाई दिया-

करता केरे बहुत गुण, औगुण कोई नाँहि। जो दिल खोजौ आपणों तौ सब औगुण मुझ माँहि।

-कबीरग्रन्थावली, वीनती कौ अध साखी ३

अब उनका भक्त हृदय सभी प्रकार के पाखण्ड और अभिमान से मुक्त हो गया है। अब उसे दूसरों के सिर पर नहीं, अपितु उनके चरणों में रोड़ा (पत्थर का टुकड़ा) बनकर रहने में प्रसन्ता है। हृदय की इसी विनम्रता में भगवान् बसते हैं-

रोड़ा ह्वै रहौ बाट का तजि पाषण्ड अभिमान। ऐसा जे जन ह्वै रहै ताहि मिलै भगवान।।

-कबीरग्रन्थावली, जीवन मृतक कौ अध साखी १४

बाबा तुलसीदास का मन भी भक्ति की इस अवस्था में पहुँचकर किसी प्रकार के मान-सम्मान की इच्छा नहीं करता। एकरस और शीतल रहकर दूसरों के गुणों का तो बखान करता है, किन्तु दोषों की ओर तो देखता भी नहीं-

बिगत मान सम सीतल मन पर गुन, नहिं दोष कहौंगे। -विनयपत्रिका, पद १७२

गीता का भगवत्-प्रिय भक्त भी समस्त प्राणियों से अद्वेष और मित्र-दृष्टि रखकर ममता और अंहकार से शून्य हो समता और क्षमा का रूप धारण कर लेता है-

अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च। निर्ममो निरहंकारः समदुःखसुखः क्षमा। -गीता १२.१३

सामान्य जनों से सामान्य प्रार्थना में ही मनुष्य इन विशेषताओं की झलक अनुभव करने लगता है, फिर उस भगवान् के आगे झोली पसारने से जिससे प्रार्थना और याचना करने पर अन्य किसी के आगे हाथ पसारना नहीं पड़ता उपासक साक्षात्-अनुभव करने लगता है कि उसका अभिमान न जाने कहाँ चला गया है; मन द्रवित होने लगा है; दृष्टि परिवर्तित हो गई है हृदय उदार हो गया है। प्राणीमात्र के प्रति अब प्रेम-ही-प्रेम उमड़ता जान पड़ता है। हृदय की यह अवस्था धन्य है; सच्ची मानवता का एक सोपान है, प्रार्थना का अनुपम फल है और केवल अनुभवसंवेद्य है, तर्क और युक्तियों की वहाँ पहुँच नहीं है।

प्रार्थना से जीवन में यदि इतने लाभ प्राप्त हों तो भी वे कम नहीं हैं। ऋषि दयानन्द लिखते हैं कि इन लाभों के अतिरिक्त दो लाभ और हैं-**उत्साह और सहाय का मिलना**। प्रार्थना का तात्पर्य ही है- अपने पूर्ण पुरुषार्थ के उपरान्त उत्तम कर्मों की सिद्धि के लिए परमेश्वर से सहायता लेना-

'हे ईश्वर! दयानिधे! भवत्कृपयाऽनेन जपोपासनादिकर्मणा धर्मार्थ काममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः।' प्रार्थी भक्त का यह दृढ़ निश्चय है कि परमेश्वर उसके सभी शुभकर्मों में सहायक ही नहीं सदा परमसहायक बने रहते हैं। उसे अपने प्रत्येक कर्म की सिद्धि में उसी का हाथ अनुभव होता है, अतः कर्म की सफलता में उसे कभी अभिमान नहीं होता और विफलता में कभी निराशा अनुभव नहीं होती, इसलिए ऐसे व्यक्ति का उत्साह कभी क्षीण नहीं होता, अपितु अधिकाधिक बढ़ता जाता है।

प्रार्थना का एक अन्य लाभ और भी अधिक विलक्षण है। वह है- परमात्मा की प्रसन्नता, अनुकूलता या कृपा। भक्त का अपना तो कुछ है ही नहीं सभी उसी का है और उसी को समर्पित है-

त्वदीय वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये।

अथवा-

मेरा मुझमें कुछ नहीं जो कुछ है सब तोर। तेरा तुझको सौंपते क्या लागत है मोर।।

यह परिपूर्ण समर्पणभाव उसे उसके प्रभु के अत्यन्त निकट ले-जाता है और प्रभु की प्रसन्नता का एक कारण बनता है। ऋषि दयानन्द 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' में स्पष्ट लिखते हैं-

"जो उत्तम कर्मों का फल और स्थान- ये सब ईश्वर की प्रसन्नता के अर्थ समर्पित कर देना अवश्य है।"

"बड़े-बड़े सब पदार्थ और शिल्पविद्या आदि के फलों मे से जो-जो फल अपने अधीन हों वे सब परमेश्वर को समर्पण कर देवें, क्योंकि सब वस्तुएँ ईश्वर की ही बनाई हैं। इस प्रकार से जो मनुष्य अपनी सब चीजें परमेश्वर के अर्थ समर्पित कर देता है, उसके लिए परम कारुणिक परमात्मा सब सुख देता है, इसमें सन्देह नहीं।" -ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, प्रार्थनायाचनासमर्पणविषयः

-डॉ. ओम प्रकाश वेदालंकार

❑❑❑

अव ते हेळो वरुण नामोभिरव यज्ञेभिरीमहे हविर्भिः।
क्षयन्नस्मभ्यमसुर प्रचेता राजन्नेनांसि शिश्रथः कृतानि।। ऋग्वेद १/२४/१४

प्रस्तुत वेदमन्त्र में प्रभु के क्रोध और पाप से बचने की प्रेरणा दी गई है। नम्रता धारण करने, यज्ञ-देवपूजा-संगतिकरण- दान की भावना विकसित कर सदा दान द्वारा समाज सेवा करने से प्रभु के क्रोध से बचा जा सकता है। पापों से दूर रहने के लिए गतिशीलता-क्रियाशीलता, प्राणशक्ति, ज्ञान की वृद्धि एवं जीवन को व्यवस्थित करने की आवश्यकता है। हम नम्रता, यज्ञ से प्रभु के क्रोध को दूर करें और गतिशील, प्राणशक्ति सम्पन्न, ज्ञानी, व्यवस्थित जीवन वाले बन पापों से बचें।

- महेश चन्द्र गर्ग, सासनी

आत्म निरीक्षण सब दोषों के सुधार का मार्ग है।
Self Realization is the way of Remedy of all evils.

आओ चुकाएँ ऋण माता-पिता का

महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने प्रमुख ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' के चतुर्थ समुल्लास में लिखते हैं-'जिस-जिस कर्म से तृप्त अर्थात् विद्यमान माता पितादि प्रसन्न हों और **प्रसन्न किए जाएँ**, उसका नाम तर्पण है परन्तु यह जीवितों के लिए है,मृतकों के लिए नहीं।

अर्थात् प्रत्येक मनुष्य का परम कर्तव्य है कि वे अपने माता-पितादि की सेवा बड़े यत्न से करे।

ऋषिवर इसी समुल्लास में आगे बुजुर्गों की सेवा के बारे में लिखते हैं-

'....उन सबको अत्यन्त श्रद्धा से उत्तम अन्न, वस्त्र, सुन्दर यान आदि देकर अच्छे प्रकार जो तृप्त करना अर्थात् जिस कर्म से **उनका आत्मा तृप्त** और शरीर स्वस्थ रहे, उस-उस कर्म से प्रीतिपूर्वक उनकी सेवा करनी, वह श्राद्ध और तर्पण कहाता है।

आपने देखा होगा कि भारतीयों/ हिन्दुओं में तर्पण तथा श्राद्ध का प्रकार आजकल अलग प्रकार से प्रचलित हो गया है। मृत्योपरान्त मृतक की आत्मा की तृप्ति के नाम पर मृतक भोज, शैय्यादान या किसी पवित्र नदी में अस्थियाँ प्रवाहित करना कर्तव्य पूर्ति मान लिया जाता है। वर्ष में एक बार श्राद्ध पक्ष आता है। कहा जाता है कि इस काल में तथाकथित ब्राह्मणों को भोजन दक्षिणादि से तृप्त करने से पितर तृप्त हो जाते हैं । यह पूर्णतया अवैज्ञानिक धारणा है,मिथ्या, कपोलकल्पित तथा धर्म के नाम पर मूर्ख बनाकर ठगने का प्रत्यक्ष उदाहरण है। वस्तुतः श्राद्ध और तर्पण जीवित बुजुर्गों का ही होता है। पितर का तात्पर्य ही जीवित माता पितादि से है। अगर जीवित रहते माँ-बाप को सुख न दिया तो मरे पश्चात् गंगादि में भस्मी प्रवाहित करना स्वयं को मूर्ख बनाना मात्र है। किसी ने इस हालात पर टिप्पणी की हैः-

'जियत पिता से दंगम दंगा,मरे पिता पहुँचाए गंगा।

अगर आप जीवन में सन्तोष तथा उन्नति चाहते हैं तो माता-पितादि के भरपूर, हृदय से निकले आशीर्वाद के बिना संभव नहीं है।

आज अनेकानेक कारणों से माता-पिता को अपना बुढ़ापा विपन्न स्थिति में, एकाकी काटना पड़ रहा है। इसीलिए Old Age Homes की संख्या बढ़ रही है। सारा जीवन ,सारी इच्छाएँ, उमंगे बच्चों के भविष्य पर कुर्बान कर देने के पश्चात् जब वे अपने को दीन-हीन आश्रित अवस्था में पाते हैं तो अपने जीवन को अभिशप्त समझते हैं। वे एकाएक यह समझने में असमर्थ हो जाते हैं कि वे इस संसार में क्यों हैं।

पिता का प्यार

पिता जीवन है, संबल है, शक्ति है,
पिता सृष्टि के निर्माण की अभिव्यक्ति है॥
पिता अंगुली पकड़े बच्चे का सहारा है,
पिता कभी कुछ मीठा है, तो कभी कुछ खारा है॥
पिता पालन-पोषण है, परिवार का अनुशासन है,
पिता भय से चलने वाला प्रेम का प्रशासन है॥
पिता रोटी है, कपड़ा है, मकान है,
छोटे से परिन्दे का बड़ा आसमान है॥
पिता अप्रदर्शित, अनन्त प्यार है,
पिता है तो बच्चों का इंतजार है॥
पिता से ही बच्चों के ढेर सारे सपने हैं,
पिता है तो बाजार के सारे खिलौने अपने हैं॥
पिता से परिवार में प्रतिपल राग है,
पिता से ही माँ की बिन्दी और सुहाग है॥
पिता परमात्मा की जगत् के प्रति आसक्ति है,
पिता गृहस्थाश्रम में उच्च स्थिति की भक्ति है॥
पिता अपनी इच्छाओं का हनन और परिवार की पूर्ति है,
पिता रक्त में दिए हुए संस्कारों की मूर्ति है॥
पिता एक जीवन को जीवन दान है,
पिता दुनिया दिखाने का अहसास है॥
पिता सुरक्षा है, अगर सिर पर हाथ है,
पिता नहीं तो बचपन अनाथ है॥
तो पिता से बड़ा तुम अपना नाम करो,
पिता का अपमान नहीं, अभिमान करो॥
क्योंकि माँ-बाप की कमी कोई पाट नही सकता,
ईश्वर भी उनके आशीषों को काट नहीं सकता॥
दुनिया में किसी भी देवता का स्थान दूजा है,
माँ-बाप की सेवा ही सबसे बड़ी पूजा है॥
विश्व में किसी भी तीर्थ की यात्रा सब व्यर्थ हैं,
यदि बेटे के होते हुए माँ-बाप असमर्थ हैं॥
वो खुशनसीब होते हैं, माँ-बाप जिनके साथ होते हैं,
क्योंकि माँ-बाप के आशीषों के हजारों हाथ होते हैं॥

साभार-वैदिक रवि

चिड़चिड़े

बुजुर्ग चिड़चिड़े हो नहीं जाते
उनकी अवहेलना उनका अवमूल्यन
उन्हें चिड़चिड़ा बना देते हैं
जब कोई नहीं सुनता उनकी
न घर में न बाहर
जब अनदेखी होती है उनकी
छोटे बड़े हर मामले में
जब वह भरे पूरे परिवार में
निपट अकेले होकर रह जाते हैं
जब वह शिद्दत से महसूस करते हैं
कि जब उनका कोई उपयोग नहीं
जब उन्हें अपना अस्तित्व
कोने कतरे में पड़े
किसी टीन के डब्बे जैसा
प्रतीत होने लगता है
जिसे आँख उठा कर देखना भी
कोई गंवारा नहीं करता
जब उनके अपने ही
भुला देते हैं उनकी उपलब्धियाँ
जीवन भर परिवार हेतु किया गया
उनका त्याग और संघर्ष
तब बुजुर्गों के मन में
एक कड़वाहट पनपने लगती है
और वह हो जाते हैं चिड़चिड़े!

ओमप्रकाश बजाज
बी२ गगन विहार, गुप्तेश्वर, जबलपुर

उनकी सार्थकता क्या है। इससे दुखद स्थिति कोई नहीं हो सकती।

कुछ वर्ष पूर्व अमिताभ जी की एक फिल्म आयी थी बागवाँ। अपनी सारी खुशी, सारा धन वे बच्चों को बनाने में खर्च कर देते हैं। अवकाश प्राप्ति के पश्चात् जब वे आत्ममुग्ध होते हैं कि अब बच्चे प्यार और सम्मान से उन्हें रखेंगे तथा जिन्दगी के सबसे सुन्दर पल अब वे चिन्तामुक्त होकर बितायेंगे तो बेटों के व्यवहार से उनके सपने चूर-चूर हो जाते हैं। हमें फिल्म का सबसे मार्मिक दृश्य यह लगा कि जब पोते की शरारत से अमिताभ जी का चश्मा टूट जाता है, तब जिस प्रकार से चीजों को सँभालकर रखने की सलाह और महंगाई की मार की बात उन्हें कही जाती है उस समय कोई पिता क्यों न मृत्यु को जीवन से बेहतर समझेगा? काश पुत्र उस समय तनिक उन पलों को याद कर लेता जब पिता द्वारा लाया गया खिलौना टूट गया और उसके आँसू पोंछकर उसकी जिद पर रात के समय भी बड़ी मुश्किल से एक दुकान खोज, पिता नया खिलौना लाया । पुनः खिलौना टूटने पर पुनः लाया। पिता को पुत्र की आँखों में एक आँसू बर्दाश्त नहीं। व्यर्थ है उस पुत्र का जीवन जो माता-पिता की आँखों में एक अश्रु का भी कारण बने।

ऊपर हमने महर्षिवर के दो उदाहरण प्रस्तुत किए हैं जिनमें से प्रथम में 'प्रसन्न किए जाएँ' और द्वितीय में 'उनका आत्मा तृप्त' को हमने गहरी स्याही में किया है। वह इसलिए कि कुछ लोग समझते हैं कि धन खर्च करने से उनकी कर्तव्य-पूर्ति हो जाती है। माता-पिता के वस्त्र, भोजन, औषधोपचार आदि पर खुले दिल से व्यय करने पर भी यह आंशिक ही कहा जायेगा । आत्मा के तृप्त होने के लिए कुछ और भी आवश्यक है।

इसे समझने हेतु यदि माँ-बाप अपने बच्चे को बड़ा करने के

विभिन्न प्रसंगों की वीडियो बनालें तो अधिक आसानी से समझ सकेंगे। उन्हें दिखेगा वह दृश्य जब वो काम पर जा रहे हैं, पहले ही देर हो चुकी है पर बालक पिता के पास जाने को मचल गया। असंभव को संभव बनाते हुए वह कुछ मिनट बालक को देता है। उसे दिखेगा वह दृश्य जब वह ऑफिस कार्य के नोट्स बना रहा है। बालक खेलता हुआ आता है, स्याही की दवात गिर जाती है सारे नोट्स खराब हो जाते हैं। बच्चे को डांट पड़ती है। बच्चा रोने लगता है। पिता सब कार्य छोड़ बच्चे को चुप कराने लगता है। गलती बच्चे की थी पर पिता Sorry कह रहा है। दुबारा से सारे नोट्स बना रहा है। उसे दिखेगा वह दृश्य जब वह सहयोगियों के साथ

गम्भीर चर्चा में निमग्न है। मना करने पर भी बालक बार-बार उस कमरे में आ जाता है। बार-बार का व्यवधान भी उसे उत्तेजित नहीं करता। उसे दिखेगा वह दृश्य जब छत पर वह पुत्र को बताता है कि वह मुंडेर पर जो पक्षी बैठा है उसे कौआ कहते हैं। बालक बार-बार पूछता है पिता खुश होकर बार-बार बताता है । झल्लाता नहीं।

बस ऐसा ही संयम, प्यार, उल्लास, सम्मान, आत्मीयता से भरा व्यवहार पितरों की आत्मा को तृप्त करता है। यही उनकी अपेक्षा है। वे वय बढ़ने के साथ कुछ-कुछ बालक-सदृश होते चले जाते हैं, इस मनःस्थिति को ध्यान में रखना होगा।

यहाँ प्रख्यात उपन्यासकार मुंशी प्रेमचन्द लिखित किशोरावस्था में पठित एक कहानी 'बूढ़ी काकी' का स्मरण हो रहा है। इसकी प्रथम पंक्ति में मुंशी जी ने वृद्धावस्था का पूरा मनोविज्ञान समाहित कर दिया है।

'बुढ़ापा बहुधा बचपन का पुनरागमन होता है।' घर में समारोह है। काकी को कमरे में बन्द रहने के सख्त निर्देश हैं। पल-पल काकी क्या सोचती है? अब कचौरी तल रही होंगी, कड़ाई में से कैसी छन छन कर रही होंगी आदि वृद्धावस्था की अभिलाषा को व्यक्त करने में समर्थ है। कोई 'बूढ़ी काकी' कोठरी में बन्द न हो यह आदर्श स्थापित करना होगा। हर समारोह में, हर पल में, वे आपके संग हों। उपेक्षा वृद्धों को सह्य नहीं।

आप कभी दो घड़ी उनके पास बैठ सुख-दुख की बात करें अपनी उलझनें भी बताएँ, चाहे वे न भी समझें। तब देखें कि वे स्वयं को अभी भी मूल्यवान समझेंगे, ड्राइंग रूम में रखा शो पीस नहीं। इस मनोविज्ञान को समझना आवश्यक है।

काश! हर बालक नन्हे हामिद के संस्कार लेकर बड़ा हो। माता ने कष्टपूर्वक कुछ 'आने' (रुपये का भाग) उसे इसलिए दिए कि वह मेले में जाकर अपने लिए चिरअभिलषित खिलौना ले आवे। पर हामिद लेकर आता है लोहे का चिमटा ताकि माँ की अंगुलियाँ रोटी बनाते समय जले नहीं। यही विशुद्ध भारतीयता है,जिसे हमें जीवित रखना है।

वेद में कहा है :-

यदापिपेष मातरं पुत्रः प्रमुदितो धयन्।

एतत्तदग्ने अनृणो भवाम्यहतौ पितरौ मया।

सम्पृच स्थ सं मा भद्रेण पृङ्.क्त।

विपृच स्थ वि मा पाप्मना पृङ्.क्त। यजु. १९.११

जैसा माता-पिता पुत्र को पालते हैं, वैसे पुत्र को माता-पिता की सेवा करनी चाहिए। सबको इस बात पर ध्यान देना चाहिए, कि हम माता-पिता की सेवा करके पितृऋण से मुक्त होवें। जैसे विद्वान् धार्मिक माता-पिता अपने सन्तानों को पापाचरण से हटाकर धर्माचरण में लगावें, वैसे सन्तान भी अपने माता-पिता के प्रति ऐसा वर्ताव करें।।

- अशोक आर्य

०९३१४२-३५१०१, ०९००१३-३९८३६

❑❑❑

पत्रिका वही नाम नया

सत्यार्थ-सन्देश का नाम अब सत्यार्थ-सौरभ

प्रिय पाठकगण! क्योंकि आर.एन.आई. द्वारा पत्रिका को 'सत्यार्थ-सौरभ' नाम से पंजीकृत किया गया है अत: अब पत्रिका का नाम

'सत्यार्थ-सौरभ'

रहेगा

डॉ. मो. कलाम अहमद

चरित्र निर्माण

चरित्र का बनना जन्म से प्रारम्भ होता है और मृत्यु तक चलता रहता है चरित्र को सफलता की आवश्यकता नहीं है। वह स्वयं ही सफलता है जिस प्रकार एक माली को बराबर जंगली घास-फूस निकालकर बगीचे के पौधों का जीवन बचाना पडता है। उसी प्रकार हमें भी अपना चरित्र बनाने के लिए अपने दोषों को दूर करते रहना पड़ता है।

चरित्र व्यक्ति के नैतिक मूल्यों, शख्सियत और विश्वासों से मिलकर बनता है। यह हमारे व्यवहार और कार्यों में झलकता है। जीतने के लिए चरित्र का होना आवश्यक होता है। जार्ज वाशिंगटन ने कहा है कि 'मैं आशा करता हूँ कि मुझमें हमेशा इतनी दृढ़ता और गुण हों कि मैं एक ईमानदार व्यक्ति के रूप में जाना जा सकूँ, जो मेरे लिए संसार के किसी भी महत्वपूर्ण पद से बढ़कर है।' चरित्र निःस्वार्थ भाव, ईमानदारी ,धारणा, साहस, वफादारी और आदर जैसे गुणों का मिला-जुला रूप है। योग्यता आपको सफलता दिलाती है और चरित्र आपको सफल बनाए रखता है। चरित्र का उत्थान ही नैतिक मूल्यों की मंजूषा एवं चारित्रिक उत्थान का मार्ग है । हमारे जीवन में चरित्र का महत्व है। इसको बताने के लिए निवर्तमान राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा का यह महत्वपूर्ण कथन स्मरणीय है- **शिक्षित चरित्रहीन व्यक्ति की अपेक्षा अशिक्षित चरित्रवान व्यक्ति समाज के लिए अधिक उपयोगी होता है।** तात्पर्य यह है कि जीवन के समस्त गुणों, ऐश्वर्यों, समृद्धियों और वैभवों की आधारशिला सदाचार है, सच्चरित्रता है। वैदिक मंत्रों में हमारे ऋषियों ने इसलिए भगवान से प्रार्थना की है कि-

असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मामृतं गमय।'

अर्थात् **हे ईश्वर मुझे असत्य से सत्य की ओर ले चलो, अन्धकार से मुझे प्रकाश की ओर ले चलो।** असत्य और अन्धकार इनका सम्बन्ध मनुष्य की चरित्रहीनता अर्थात् असत्य मार्ग से ही है। सच्चरित्र अपने शुभ कर्मों से इसी भूमि पर स्वर्ग का निर्माण करता है परन्तु चरित्रहीन, दुष्टात्मा व्यक्ति आपने कुकृत्यों से इस पवित्र धराधाम को नरक बना देता है। मैथिलीशरण गुप्त तो सदाचार को ही स्वर्ग और दुराचार को नरक मानते हैं।

खलों को कहीं भी नहीं स्वर्ग है, भलों के लिए तो यही स्वर्ग है।
सुनो स्वर्ग क्या है?सदाचार है। मनुष्यत्व की मुक्ति का द्वार है।
नहीं स्वर्ग कोई धरावर्ग है, जहाँ स्वर्ग का भाव है,स्वर्ग है।।

सदाचार ही गौरवागार है, मनुष्यत्व को सुशिक्षा, सत्संगति तथा स्वानुभव की जरूरत होती है,क्योंकि कहा गया है कि

''संसर्गजाःदोषगुणा भवन्ति।''

अर्थात् दोष और गुण संसर्ग से ही उत्पन्न होते हैं। अतः सच्चरित्र बनने के लिए शिक्षा से भी अधिक आवश्यकता अच्छी संगति की है। सत्संगति नीचे-से-नीचे मनुष्य को उत्तम बना देती है। गोस्वामी जी के अनुसार

'सठ सुधरहिं सत्संगति पाई। पारस परस कुधातु सुहाई।'

पारस पत्थर का स्पर्श करते ही लोहा भी सोना बन जाता है। इसी प्रकार दुष्ट मनुष्य भी सत्संगति पाकर सुधर जाता है।

'कोटोअपि सुमनः संगत आरोहित सत्ता शिरा'

अर्थात् साधारण कीड़ा भी फूलों की संगति से बड़े बड़े देवताओं और महापुरुषों के मस्तक पर चढ़ जाता है। अंग्रेजी की एक कहावत का भाव है कि 'अगर मनुष्य का धन नष्ट हो गया तो उसका कुछ भी नष्ट नहीं है और यदि उसका चरित्र नष्ट हो गया तो उसका सब कुछ नष्ट हो गया । शुद्धाचरण से मनुष्य को धन भी प्राप्त होता है, अच्छी सन्तान भी प्राप्त होती है और वह दीर्घजीवी होता है। एक श्लोक में कहा गया है-

'आचाराल्लभते आयुः आचारदीप्सिताःप्रजाः। आचाराल्लभते ख्याति,आचाराल्लभते धनम्।।

आदर्श महापुरुष श्री राम की सच्चरित्रता आज किससे छिपी है?भारत के लाखों नर नारी आज भी उनके पवित्र चरित्र से अपने जीवन को उज्ज्वल बनाते हैं। महात्मा गांधी भी अपने चरित्र के कारण ही एक साधारण व्यक्तित्व से उठकर आज के युग के महापुरुष माने जाते हैं। सच्चरित्रता से मनुष्य को अनेक लाभ होते हैं, क्योंकि सच्चरित्रता किसी खास गुण का बोध

शब्द नहीं है। अनेक गुण-सत्य, उदारता, विनम्रता, सुशीलता, सहानुभूतिपरता, विशिष्टता आदि जिस मनुष्य में होते हैं वह मनुष्य सच्चरित्र कहलाता है। उस मनुष्य की समाज में प्रतिष्ठा होती है और उसे आदर और सम्मान दिया जाता है। इस लोक में कीर्ति का पात्र बनता हुआ अन्त में स्वर्ग को प्राप्त करता है। सच्चरित्रता से मनुष्य अपनी आत्मा का संस्कार कर लेता है। सच्चरित्रता से मनुष्य सुख और सन्तोष प्राप्त करता है तथा शान्तिमय जीवन व्यतीत करता है। लोग उसके आदर्श चरित्र पर चलकर अपना भविष्य बनाते हैं।

चरित्रवान बनना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है। चरित्र से मनुष्य समाज में इज्जत पाता है। अपनी आत्मा का कल्याण करता हुआ देश और समाज का भी भलाई (कल्याण) करता है। सच्चरित्रता सुख और समृद्धि का सोपान है। सच्चरित्रता के अभाव में आज देश के समक्ष अनेक भयानक समस्याएँ हैं। सबसे बड़ी एवं महत्वपूर्ण समस्या है,अपनी स्वतंत्रता की रक्षा। जो देशवासी चरित्र भ्रष्ट है, वे निःसन्देह देश की रक्षा या देश का अभ्युत्थान नहीं कर सकते। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेद ने लिखा है-

'चरित्र-बल हमारी प्रधान समस्या है। हमारे महान् नेता महात्मा गांधी ने कूटनीति चातुर्य को बडा नहीं समझा, बुद्धि विकास को बड़ा नहीं माना, चरित्र-बल को ही महत्व दिया है। आज हमें सबसे अधिक इसी बात को सोचना है। यह चरित्र-बल भी केवल एक ही व्यक्ति का नहीं, समूचे देश का होना चाहिए।'

रूस में एक कहावत है, 'हथौड़े की चोट शीशे को तोड़ देती है, लेकिन लोहे को फौलाद बनाती है।' इस बात में बहुत सच्चाई है। हम शीशे के बने हैं या लोहे के? हथौड़ा तो वही है। जिस प्रकार स्टील की क्वालिटी कार्बन से पहचानी जाती है, उसी प्रकार आदमी की क्वालिटी उसके चरित्र से पहचानी जाती है। महात्मा गांधी के अनुसार सात महापाप हैं-मेहनत के बिना दौलत; अन्तरात्मा के बिना आनन्द; चरित्र के बिना ज्ञान; नैतिक मूल्यों के बिना व्यापार; इंसायनियत के बिना साइंस; त्याग के बिना धर्म; सिद्धान्तों के बिना राजनीति।

हिन्दू फिलोसॉफी का मानना है कि जब अच्छे इन्सान इस संसार से जाते हैं,तो वे मरते नहीं सिर्फ गुजर जाते हैं। उनका नाम उनके अच्छे कामों की वजह से सदा अमर रहता है। दूसरी ओर मौत तो सिर्फ धूर्तों को आती है और उनके जाने से धरती का बोझ हल्का होता है।

महापुरुषों के विचार

'आज तक कोई इन्सान इसलिए सम्मानित नहीं हुआ कि उसने दुनिया से क्या लिया,लेकिन इसलिए जरूर हुआ कि उसने क्या दिया।'

काल्विन कूलिज

'यूनिवर्सिटी की पहली जिम्मेदारी ज्ञान देना और चरित्र निर्माण होता है,न कि व्यापारिक और तकनीकी शिक्षा देना।'

विस्टन चर्चिल

'पहले वे जो रोजाना आने वाले हालात का सामना सही ढंग से करते हैं और वे जो हालात से सामना होने पर सही निर्णय लेने और सही कदम उठाने में शायद ही कभी चूकते हों। दूसरे वे जो दूसरोंके साथ व्यवहार में बड़प्पन दिखाते हैं,दूसरों के अप्रिय व्यवहार और बातों का बुरा नहीं मानते और अपने सहयोगियों के साथ उतने भले होते हैं,जितना कि एक इन्सान हो सकता है। और आगे, वे जो अपनी खुशियों पर काबू रखते हैं और कठिनाइयों को अपने ऊपर हावी नहीं होने देते और कठिन परिस्थितियों का मुकाबला एक बहादुर इन्सान की तरह करते हैं,जो इन्सानी फितरत है।

और सबसे बड़ी बात यह है कि वे लोग जो सफलता मिलने पर बिगड़ते नहीं, जो अपनी असलियत से मुँह नहीं मोड़ते; साथ ही बुद्धिमान और धीर गम्भीर व्यक्ति की तरह दृढ़ता से जमीन पर पैर जमाए रखते हैं,तुक्के से मिली अच्छी चीजों पर खुश होने के बजाए जन्म से मिली काबिलियत और बुद्धि से प्राप्त कामयाबियों पर खुश होते हैं। खुश होने की ऐसी प्रवृत्ति उनकी बचपन से होती है। जिन लोगों के चरित्र में इनमें से एक दो नहीं,बल्कि सारे गुण हैं,जिन्होंने ये सभी बातें सीखी हैं- वे ही सर्वगुण सम्पन्न सच्चे अर्थों में शिक्षित हैं।'

सुकरात (४७० ईसा पूर्व से ३९९ ईसा पूर्व)

'जब कभी भी हम अनजानी परिस्थितियों से घिर जाते हैं, तो यह चरित्र ही है, जो हमारी और दूसरों की ताकत और कमजोरियों की पहचान करता है। यह (चरित्र) हमें इस बात की बुद्धि देता है कि हमारे लिए क्या अच्छा और सही है? एक

बार फिर से,यह चरित्र ही है,जो हमें यह सिखाता है कि क्या देखना है और क्या नजरअंदाज करना है,कब दूसरों की सलाह लेनी है और कब खुद फैसले लेने हैं? 'चरित्र,सही कामों को अमल में लाने और आदर्शों पर भरोसा करने से ही बनता है,चाहे हमें इस बात पर पूरा यकीन हो कि वे हमारी कोई सहायता नहीं कर पाएंगे।'

-रिचर्ड बैक 'वन'

'चरित्र को ठीक हालत में रखना ठीक ऐसा ही है जैसे किसी गाड़ी की देखभाल की जाती है। चरित्र निर्माण में पल-पल का समय लगता है और इसकी असली पहचान मुसीबत के समय होती है। एक व्यक्ति सिर्फ मुसीबत के समय ही अपना चरित्र निर्माण नहीं करता,बल्कि यह तो कहीं पहले से हो रहा होता है। मुसीबत के दौरान तो वह अपनी तैयारी का प्रदर्शन दिखाता है। **एक ठोस चरित्र वाला व्यक्ति कभी भी कोई गलत काम नहीं करेगा,चाहे वह यह जानता है कि ऐसा करते हुए वह पकड़ा नहीं जाएगा। एक राष्ट्र को मजबूत और आजाद रखने लिए कुछ ऐसी बातें,जो हमेशा मौजूद होंगी। जब तक मूल्यों और चरित्रों को कायम रखा जायेगा,एक राष्ट्र और उसके लोग सदैव जीवित रहेंगे।'**

-अज्ञात

राष्ट्र और सभ्यताएँ चरित्र की नींव पर ही आधारित होती हैं। आज हर इन्सान के अन्दर एक द्वन्द्व चल रहा है-सच्चाई और बुराई के बीच सारी जिन्दगी उनमें यह कशमकश चलती रहती है और अन्त में एक की तो जीत निश्चित है,लेकिन यह हमारे ही हाथ में है कि कौनसी चीज हम चुनना चाहते हैं और बनना चाहते हैं।

जेकिल और हाइड क्लब स्थापित

१९३१ न्यूयॉर्क सिटी

जीवन एक नैतिक और आत्मिक यात्रा है। अच्छा और मजबूत चरित्र अनुशासन के साथ किए गए अच्छे व्यवहार का परिणाम होता है। अतः हमारा कर्तव्य है कि हम सभी देशवासी सच्चरित्र बनें,विशेष रूप से विद्यार्थियों को सच्चरित्र होना ही चाहिए क्योंकि देश के भावी कर्णधार वे ही हैं,उन्हें ही देश का भार अपने कन्धों पर रखना है। अतः प्राणपण से अपने चरित्र को सुधारने का प्रयत्न करना चाहिए क्योंकि

'वृत्तं यत्नेन संरक्षेत वित्तमायाति याति च। अक्षीणो विततः क्षीणः वृत्ततस्तु हतो हतः।।'

अर्थात् चरित्र की यत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिए। धन तो आता है और चला जाता है,धन से क्षीण हुआ मनुष्य क्षीण नहीं कहा जाता,परन्तु जिस मनुष्य का चरित्र नष्ट हो जाता है,वह तो नष्ट है ही।वास्तव में सबसे कीमती चीज चरित्र है,जो पैसे से खरीदी ही नहीं जा सकती। चरित्र अमूल्य है। चरित्र कोई उपहार नहीं है,बल्कि यह तो एक गुण और उपलब्धि है। एक चरित्रवान की खास विशेषताएँ विश्वास,नैतिकता और ऊँचे आचार-विचार होते हैं,बढ़िया चरित्र के लोग अपने मूल्यों के साथ जीते हैं। चरित्र को बनाए रखना आसान है,लेकिन उसे खोकर फिर से हासिल करना मुश्किल है। चरित्र आत्म सम्मान उत्पन्न करता है,जो आगे चलकर ऊँचे स्वाभिमान का रूप धारण कर लेता है। प्रौढ़ता,चरित्र के हर पहलू जैसे कि हम जो निर्णय लेते हैं, जिस तरह के मित्र बनाते हैं और जो जिम्मेदारियाँ स्वीकार करते हैं,में से झलकती है। व्यक्ति के जीवन का निर्माण चरित्र पर टिका होता है। अतः चरित्र ही भाग्य है।

❑❑❑

(साभार- प्रतियोगिता दर्पण)

पूज्य पिता की प्रेरणा, है उन्नति का मूल
सेवा और सत्कर्म से, खिलें खुशी के फूल

सत्यार्थ-सौरभ घर-घर पहुँचावें

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल

अध्यक्ष - न्यास

कविता

सत्यार्थ प्रकाश

जीवन के सत्य अर्थ का
प्रकाश करे सत्यार्थ प्रकाश
मिथ्या ज्ञान अधर्म तिमिर का
नाश करे सत्यार्थ प्रकाश
सत्य-श्रवण मनन करने का
मन में नहीं तनिक विश्वास
वे जन ही घबराते देखे
जब पढते सत्यार्थ प्रकाश
घोर अँधेरा गहन निराशा
बची न हो जीवन की आश
अमर कृति दयानन्द की
अवश्य पढ़ें सत्यार्थ प्रकाश

- डा. सीता राम पाटीदार आनंद
कसरावद , निमाड, -४५१२२८

मजहबी आरक्षण के खतरे

डॉ. वेद प्रताप वैदिक

आन्ध्र के उच्च न्यायायलय ने कमाल कर दिया। जाति के आधार पर दिए जा रहे आरक्षण से देश पहले ही बिखर रहा है, अब मजहब के आधार पर आरक्षण दिया जाने लगा था। इसी साल मार्च में राज्यों में चुनाव जीतने की बड़ी चुनौती कांग्रेस के सामने थी। उसने सोचा यदि उसे मुसलमानों के थोकबंद वोट हथियाने हैं तो वह उनके सामने आरक्षण की गाजर लटका दे। उत्तरप्रदेश में इस हथकंडे के सफल होने की आशा सबसे ज्यादा थी। दिसम्बर २०११ में केन्द्र सरकार ने घोषणा कर दी कि शिक्षा और सरकारी नौकरियों में मुसलमानों को ४.५ प्रतिशत आरक्षण दिया जायेगा। लेकिन मुसलमान जरा भी नहीं फिसले। उन्होंने चुनावों में कांग्रेस को सबक सिखा दिया। अब आन्ध्र प्रदेश के उच्च न्यायालय ने दोहरी मार लगा दी। साम्प्रदायिक आरक्षण को राजनीति और कानून दोनों ने रद्द कर दिया।

अदालत ने सरकार के इस आदेश को चलताऊ बताया है । उसका कहना है कि सरकारी वकील यह नहीं बता सके कि 'अल्पसंख्यक का अर्थ क्या है? क्या ईसाई, बौद्ध, सिख जैन,यहूदी और पारसी भी अल्पसंख्यक नहीं हैं? यदि अल्पसंख्या का आधार धर्म या मजहब ही है तो मुसलमानों के मुकाबले ये अन्य धर्मावलम्बी तो कहीं ज्यादा बड़े अल्पसंख्यक हैं,क्योंकि इनकी संख्या तो बहुत कम है। हालांकि अदालत ने यह तर्क नहीं दिया है लेकिन तर्क तो यह भी बनता है कि यदि आरक्षण का आधार अल्पसंख्या है तो जो अल्पसंख्यक हैं उन्हें भी आरक्षण मिलना चाहिए और ज्यादा मिलना चाहिए। पहले मिलना चाहिए। सरकारी आदेश में इसके बारे में कोई संकेत नहीं है, यानी अदालत की नजर में यह आदेश जारी करते समय सरकार ने लापरवाही बरती है। अदालत की यह आलोचना जरा नरम है। उसे कहना चाहिए था कि सरकार ने लापरवाही नहीं बरती,बल्कि बड़ी चतुराई से थोकबंद वोट खींचने की साजिश की थी।

वास्तव में हमारी अदालतों को चाहिए कि वे 'अल्पसंख्यक' शब्द पर ही गंभीर बहस चलायें। राजनीति में अल्पसंख्यक कौन है? वही है,जो खुद हार जाए या जिसका उम्मीदवार हार जाए। हर चुनाव में मतदाताओं का एक हिस्सा बहुसंख्यक सिद्ध होता है और दूसरा अल्पसंख्यक। बहुसंख्या और अल्पसंख्या बदलती रहती है। लोकतंत्र में कोई भी स्थायी रूप से अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक नहीं हो सकता। भाषा, धर्म, जाति, रूप-रंग में जरूर स्थायी अल्पसंख्यक बहुसंख्यक हो सकते हैं लेकिन उनके नाम पर चलने वाली राजनीति क्या शुद्ध राजनीति होती है?वह भ्रष्ट राजनीति होती है। मुसलमानों के लिए ४.५ प्रतिशत आरक्षण का मकसद भला क्या था?यदि सरकार का तर्क यह है कि उसने मुसलमानों का नहीं बल्कि मुसलमानों में जो पिछड़े हैं,सिर्फ उन्हें आरक्षण दिया है तो यह तर्क भी बड़ा लचर है। इसके विरुद्ध कई तर्क खड़े हो जाते हैं।

सबसे पहला तर्क तो यह है कि आप कैसे तय करेंगे कि मुसलमानों में पिछड़ा कौन है? यह सिर्फ जातियों के आधार पर ही तय करेंगे यानी आप कानूनी तौर पर यह मानेंगे कि इस्लाम में जातियाँ होती हैं। यह इस्लाम के सिद्धान्तों के विरुद्ध होगा,क्योंकि इस्लाम तो इंसानी बराबरी का धर्म है। इस्लाम पर जातिवाद क्यों थोपा जा रहा है?दूसरा मुसलमानों में जिन जातियों को आप पिछड़ा मान लेंगे,वे फायदे में रहेंगी और जिन्हें पिछड़ा नहीं मानेंगे वे नुकसान में रहेंगी। आप धार्मिक आरक्षण के नाम पर अपना उल्लू तो सीधा कर लेंगे लेकिन मुसलमान को आपस में लड़वा देंगे।

तीसरा यदि आप गरीबी के आधार पर पिछड़ापन तय करते हैं तो गरीबों में भी फर्क क्यों डालते हैं?एक गरीब और दूसरे गरीब में फर्क क्या है?क्या गरीब लोग सिर्फ हिन्दुओं और मुसलमानों में ही हैं,दूसरे मजहबों में नहीं हैं? सिर्फ मजहबों की बात नहीं है। यह बात जाति पर भी लागू होती है। कोई किसी भी जाति या मजहब के अमीर व शक्तिशाली व्यक्ति को आरक्षण देना सामाजिक न्याय नहीं,सामाजिक अन्याय है।?

चौथा,अनेक मुस्लिम संगठनों ने माँग की थी कि आरक्षण

देना है तो सभी मुसलमानों को दें ताकि आरक्षित पदों को भरने वाले उपयुक्त लोग तो मिल सकें,क्योंकि आरक्षितों में उन पदों पर पहुँचने की इच्छा,जरूरत और न्यूनतम योग्यता भी तो होनी चाहिए । पाँचवा यह आरक्षण मुसलमानों को स्वतन्त्र रूप से नहीं दिया गया था। यह पिछड़ों के २७ प्रतिशत के कोटे से काटकर दिया गया था। यानी गाँव-गाँव में रहने वाले हिन्दू पिछड़ों और मुस्लिम पिछड़ों में तलवार खिंचती उनमें वैमनस्य फैलता। इसका एक नतीजा यह भी हुआ कि कांग्रेस ने हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों के वोट खोए। आन्ध्र की अदालत ने दो टूक फैसला देकर भारत के साम्प्रदायिक सद्भाव को सबल बनाया है। छठा अदालत ने इस सरकारी आदेश को असंवैधानिक करार दिया है क्योंकि इसका आधार मजहब था। यह कानूनी दृष्टि है। लेकिन राजनीतिक दृष्टि से देखें तो मजहबी आरक्षण आगे जाकर पता नहीं कितने और कैसे-कैसे नए पाकिस्तानों को खड़ा कर देगा क्योंकि हमारे यहाँ तो सम्प्रदायों के अंदर भी अनेक उप सम्प्रदाय होते हैं।

इस फैसले के विरुद्ध उच्चतम न्यायालय में अपील करने के बजाय भारत सरकार को चाहिए कि वह मजहब के अलावा जाति के आधार पर दिये जाने वाले आरक्षण पर भी पुनर्विचार करे और यह भी सोचे कि आरक्षण सिर्फ शिक्षा में दिया जाए और नौकरी में बिल्कुल नही। यदि आरक्षण सिर्फ शिक्षा में दिया जाए तो देश के ८० करोड़ गरीबों की जिन्दगी में नया उजाला पैदा हो जायेगा। वे भी पद पायेंगे , वह किसी की कृपा से नहीं,बल्कि अपनी योग्यता से पायेंगे। उनके आरक्षण का आधार उनकी जरूरत होगी,उनकी जाति नहीं। वे लोग अपने पद पर पहुँचकर सिर्फ अपनी जाति नहीं,पूरे देश की सेवा करेंगे। भारत सबल बनेगा।

- ए-१४, प्रेस एनक्लेब साकेत, नई दिल्ली-१७

(आभार- दैनिक भास्कर)

❑❑❑

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सन्देश (₹ ११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री आर.डी. गुप्त, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा एवं

स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती
पिण्डवाडा

स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती
सायला गुजरात

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती
दिल्ली

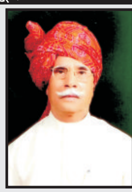

श्रीयुत् राव हरिचन्द्र
नागपुर

श्री दीपचंद आर्य
किरतपुर

श्री रघुनाथ मित्तल
भीलवाड़ा

श्री जयदेव आर्य
भीलवाड़ा

श्री श्रवण कुमार गुप्ता
गुड़गाँव

(स्व.) आचार्य प्रेमभिक्षु
मथुरा
पावन स्मृति में - आभाआर्या (पुत्रवधु)

श्री लक्ष्मण सराफ
भीलवाड़ा

श्री खुशहालचंद्र आर्य
कोलकाता

श्री कृष्ण चौपड़ा
यू.के.

श्री नरेश कुमार राणा
नई दिल्ली

श्रीमती पुष्पा गुप्ता
उदयपुर

श्री विजय तायलिया
उदयपुर

श्री वीरेन्द्र मित्तल
उदयपुर

श्री मोती लाल आर्य
आबूरोड़

"सत्यार्थ दूत"
श्रीमती सरोज वर्मा
जयपुर

प्रो. आई. जे. भाटिया
नासिक

श्री राजकुमार गुप्ता एवं श्रीमती सरला गुप्ता
उदयपुर

गुप्त
दान
उदयपुर

आर्य समाज
गाँधीधाम
गुजरात

गुप्त
दान
नई दिल्ली

उत्थान एवं पतन(व्यक्ति एवं समाज का)

उत्थान एवं पतन ये दोनों ही व्यक्ति के साथ भी संबंधित हैं,समाज के साथ भी तथा राष्ट्र के साथ भी। उन्नति तथा अवनति इनसे पृथक् हैं। उन्नति-अवनति का मापदण्ड धन सम्पत्ति,पद,वैभव तथा धन के आधार पर होने वाली सुख सुविधाएं हैं। जिस व्यक्ति के पास ये प्रचुर मात्रा में हैं,वह समुन्नत समझा जाता है। इसके अभाव में अवनति मानी जाती है। यही हाल समाज एवं राष्ट्र का है। भौतिक सुख समृद्धि से परिपूर्ण राष्ट्र समुन्नत कहे जाते हैं तथा इसके विपरीत अवनत माने जाते हैं। उत्थान-पतन इनसे बिल्कुल पृथक् है। हो सकता है कि कोई व्यक्ति तथा राष्ट्र भौतिक दृष्टि से समुन्नत होने पर भी पतन की ओर जा रहा हो अथवा इनके अभाव में भी वह उत्थान की ओर अग्रसर हो।

उत्थान एवं पतन का सम्बन्ध मन एवं आचरण से है। व्यक्ति के कर्म तथा इनको कराने वाला उसका मन कैसा है, इसी बात पर उसका उत्थान-पतन निर्भर करता है,उसकी सम्पत्ति पर नहीं। राष्ट्र एवं समाज के संदर्भ में भी ऐसा ही है। राष्ट्र भौतिक उन्नति कितनी कर रहा है,पूर्वापेक्षया कितना समृद्ध होता जा रहा है,राष्ट्रीय तथा व्यक्तिगत आय में वृद्धि होती जा रही है या नहीं,इन बातों पर राष्ट्र तथा समाज का उत्थान-पतन निर्भर नहीं करता। ये सब तो उसकी समृद्धि के प्रमाण हैं, भौतिक उन्नति के मापदण्ड हैं। उत्थान एवं पतन को इनसे नहीं आंका जा सकता। उत्थान -पतन के लिए हमें राष्ट्रवासियों एवं राष्ट्र के राष्ट्रीय चरित्र की पहचान करनी होगी,राष्ट्र में नागरिक सत्य,ईमानदारी आदि का कितना प्रयोग करते हैं,वे अपने सामाजिक एवं राष्ट्रीय कर्तव्यों का कितनी तन्मयता एवं शुचिता से पालन करते हैं, उनके धन कमाने के साधन कितने पवित्र हैं,वे अपने जीवन में दैनिक कर्मों में नैतिकता अथवा धर्माधर्म का विचार करते हैं या नहीं, उनमें पारस्परिक प्रेम, सौहार्द, निःस्वार्थता तथा कर्तव्य परायणता कितनी है,इत्यादि बातों पर व्यक्ति एवं राष्ट्र का उत्थान-पतन निर्भर करता है, भौतिक समृद्धि पर नहीं।

डॉ. रघुवीर वेदालंकार

भौतिक समृद्धि तो रावण के पास भी उपस्थित थी। वह शास्त्रों का विद्वान् भी था, तथापि उसे राक्षस की संज्ञा मिली, जबकि वन में रहते हुए, सर्वसाधन हीन राम सबके उपास्य बने। **अन्तर था तो केवल चरित्र का**। यही उन्हें देव तथा राक्षस बना रहा था। रावण घोषणा करता है कि अन्यों की स्त्रियों का अपहरण, मद्य-मांस आदि का सेवन तथा सुखोपभोग करना राक्षसों का परम धर्म है। आज के समय की तुलना रावण राज्य से करें तो उस युग से हम कुछ आगे ही बढ़ गये हैं। स्त्रियों, कन्याओं के नित्य अपहरण, बलात्कार, उनकी हत्या, यहाँ तक कि उनकी बोटियों को तन्दूर में जला डालना राष्ट्रीय पतन को चिह्नित करते हैं। ऐसे दुष्कर्मों में सामान्य, अशिक्षित व्यक्ति नहीं,अपितु इस धर्म प्रधान भारत देश के मंत्री तक लिप्त पाये जाते हैं।

देखने में ऐसा आ रहा है कि यह देश ज्या-ज्यों भौतिक उन्नति करता जा रहा है,त्यों-त्यों पतन की ओर भी तेजी से बढ़ता जा रहा है। सभी नागरिक पूर्वापेक्षया आर्थिक दृष्टि से समृद्ध हैं, किन्तु इस समृद्धि के साथ-साथ उनकी तृष्णा इतनी प्रबल होती जा रही है कि नित्य नये घोटाले प्रत्येक क्षेत्र में देखने को मिलते हैं। पुलिस या राजनीति को तो आप भ्रष्ट कह भी सकते हैं,किन्तु ये घोटाले तो प्रत्येक क्षेत्र में कायम हैं, यहाँ तक कि न्याय व्यवस्था को भी इसने नहीं छोड़ा। सबसे अधिक चौंकाने वाली बात यह है कि ये घोटाले बिना किसी भय के आम आदमी के द्वारा किये जाते हैं। जहाँ भी जिसका दाँव लगता है, हेरा-फेरी, बेईमानी, घोटाला करने से नहीं चूकता

। चाहे बैंक का क्षेत्र हो, सरकारी या प्राइवेट नौकरियों का हो, राजनीति का हो, सर्वत्र इसका प्रसार है जिन लोगों पर देश की जिम्मेदारी है, जो देश के लिए कानून बनाते हैं, ऐसी गरिमामयी संसद के बाबू भाई जैसे कबूतर बाज सांसद सबके सामने हैं। उत्तर प्रदेश में अमरमणि त्रिपाठी जैसे मंत्री या बिहार के शाहबुद्दीन जैसे सांसद इसी देश की धरोहर हैं और तो और, शिक्षा जैसा पवित्र तथा सेना जैसा देशरक्षक विभाग भी घोटालों की चपेट में आ गया। जब शीर्षस्थ लोगों का यह हाल है तो जन सामान्य में तो अब्दुल रहीम तेलगी जैसे तथा दिल्ली के मल्होत्रा जैसे पता नहीं कितने लोग हैं जो लोगों के देखते ही देखते फटीचर से अरबपति बन गये। इतना ही नहीं, अपितु धन के लिए हम देश के साथ गद्दारी करने से भी नहीं चूकते। धन के कारण ही शत्रु देश को अपने देश की गुप्त सूचनाएँ दे दी जाती हैं,देश द्रोहियों की सहायता की जाती है। मुम्बई बम काण्ड में थापा नामक व्यक्ति को इसीलिए सजा मिली थी कि उसने पैसे के लिए दाऊद इब्राहिम की सहायता की थी। न्यायपालिका अभी भी अपना कर्तव्य पालन कर रही है, जिससे इस प्रकार के लोगों

पर अंकुश तो है, किन्तु न्यायपालिका के पास कोई गुप्तचर विभाग नहीं है जिससे कि वह इस प्रकार के देशव्यापी भ्रष्टाचार पर लगाम लगा सके। राजनेता तो स्वयं इनमें लिप्त रहते हैं। यह देश के पतन की चरम सीमा है।

हमारी सामाजिकता भी बड़ी तेजी से दूर भागती जा रही है। सामाजिक बन्धन शिथिल होते जा रहे हैं। जिस कारण पुरानी मान मर्यादाएँ नष्ट होती जा रही हैं। पहले पूरा गाँव एक सामाजिक बन्धन में बँधा होता था। गाँव की बहन बेटियाँ सभी की बहन बेटियाँ समझी जाती थीं,चाहे वह सवर्ण हो या निम्न जाति वाला। बहुत अच्छा सम्बन्ध था यह,इससे जीवन पवित्र था किन्तु आज एक ही गाँव के दो प्रेमी युगल घर से भागकर शादी कर लेते हैं। इतना ही नहीं अपितु ये भगोड़े प्रेमी एक ही गोत्र वाले होने पर भी परस्पर दाम्पत्य सूत्र में

बंध जाते हैं,जबकि अपने ही गोत्र में विवाह करना वैज्ञानिक तथा धार्मिक दोनों दृष्टियों से उचित नहीं है [बच्चों को मर्यादाओं की शिक्षा करना पृथक् बात है परन्तु विरोध स्वरूप विकसित हो रही 'आनर किलिंग' पशुता तथा दानवता है। -सम्पादक]

प्रेम की आड़ में कितने ही गुरु- शिष्याएँ भी अपने आपको भ्रष्ट करके समाज को कलंकित करते रहते हैं। कुछ सामाजिक व्यक्ति तथा मंत्री तक उनका समर्थन करते हैं। यह हमारा सामाजिक पतन है। आज वयस्क होने के अधिकार को पाकर कितनी ही कन्याएँ अपने जन्म पालक-हितैषी माता-पिता की,अपने खानदान की,अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा की परवाह न करके घर से भागकर किसी भी प्रेमी को अपना सर्वस्व सौंप देती हैं या वह किसी प्रेमी के द्वारा भगा ली जाती हैं। दोनों अवस्थाओं में वयस्क होने के कारण न्यायालय भी उनका ही पक्ष लेता है। ऐसे स्वच्छन्द कार्यों से समाज कैसे सुरक्षित रहेगा। ऐसे में तो कोई भी किसी के साथ भाग जाए,या कोई किसी को भगा ले जाए,ये सभी निर्दोष ही माने जाने लगेंगे।

[वस्तुतः ऐसे कार्य प्रायः प्रेम के नहीं वासना के अधीन होने से चिन्त्य हैं। विवाह यूँ तो लड़के लड़की की प्रसन्नता से होना चाहिए पर माता-पिता का आशीर्वाद विवाह के द्वारा दो परिवारों को जोड़ देता है। -सम्पादक]

समाज के अन्य सम्बन्ध भी इसी प्रकार चरमरा कर ध्वस्त होते जा रहे हैं। आज ससुर बहू का तथा पिता-पुत्री का सम्बन्ध भी पवित्र नहीं रह गया है। जो माता पिता नाना कष्ट उठाकर सन्तान का पालन पोषण करते हैं,उनकी सुयोग्य

सन्तान उन्हें किसी बहाने से हरिद्वार आदि ले जाकर निराश्रित अवस्था में छोड़ आती है तथा दिल्ली में एक बूढ़ी माँ को स्वयं उसकी पुत्री ही उसके दामाद के द्वारा कूड़ाघर में फिंकवा देती है। इस पुत्री को अपने भावी बुढ़ापे का भी ध्यान नहीं रहता कि कल को उसकी सन्तान भी उसके साथ यही व्यवहार कर सकती है। इतना ही नहीं अपितु जब एक माँ अपने नवजात शिशु को कूड़ेदान में फेंक देती है जिससे सुकोमल नन्हे शरीर में बीसों घाव हो जाते हैं तो यह पशुओं से भी गया बीता, मानवता की हत्या करने वाला, जघन्य कार्य है। ऐसी घटनाओं के बाद भी हम कहें कि भारत उन्नति करता जा रहा है तो यह शरम की बात है। आश्चर्य की बात तो यह है कि ऐसे जघन्य काण्ड होने पर भी समाज का आक्रोश प्रकट नहीं होता। थोड़ा सा शोर करके हम पुनः अपनी मस्ती की जिन्दगी जीने लगते हैं। न्यायप्रक्रिया इतनी जटिल तथा विलम्ब युक्त है कि अपराधी मौज से जुगाली करते रहते हैं। इतना ही नहीं,वे विरोधी गवाहों को धमकाते रहते हैं,धन से खरीदते रहते हैं तथा दोनों ही तरीकों से वश में न आने पर उन्हें यमराज के दरबार में भी पहुँचा देते हैं। इसी का परिणाम है कि कहीं उचित गवाही के अभाव में,कहीं पुलिस तंत्र की निष्क्रियता तथा बेईमानी से अपराधी छूट जाते हैं। यही कारण है कि हमारे समाज में यू.पी. के निठारी गांव जैसे काण्ड होते रहते हैं जहाँ पर नर-पिशाच बच्चों के साथ न केवल दुष्कर्म करते हैं अपितु वे आदमखोर इनके मांस को भी घर में पकाकर खाते हैं। इस प्रकरण में आजकल अकेले सुरेन्द्र कोली पर दोष मढ़ा जा रहा है,मानो उसका मालिक पण्डेर तो देवता ही हो। जेसिका लाल तथा कटारिया जैसों को गोलियों से भूनना आज आम बात हो गई है। क्या यह हमारे उत्थान का प्रतीक है? यदि हाँ तो पतन किसे कहते हैं?

इस पतन का कारण धन नहीं है अपितु संस्कारहीनता है। न आज हमें राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्र से प्रेम करना सिखलाया जाता है,न ही सामाजिक स्तर पर ईमानदारी,न बन्धुत्व, सेवा, त्याग आदि की शिक्षा दी जाती है, न ही शिक्षा के माध्यम से नैतिकता को हमारे मानस में बैठाया जाता है, क्योंकि हम धर्मनिरपेक्ष हैं। यदि गरीबी ही पतन का तथा दुष्कर्मों का कारण होती तो गरीब ही सबसे अधिक दुष्कर्मी होते, किन्तु ऐसा नहीं है। आज तो ऊँचे पदों वाले, अतुल धन-सम्पत्ति वाले, अधिकार वाले व्यक्ति अधिक भ्रष्ट हैं। उनके पास पैसा, पद, शक्ति, सब कुछ है, जिसके बल पर वे सरेआम अपनी काली करतूतों को निर्भीकता एवं निर्लज्जता पूर्वक करते रहते हैं। गरीब तो फिर भी दण्ड से तथा भगवान से डरता है,किन्तु ऊँचे लोगों के तो दोनों ही मुट्ठी में रहते हैं।

पाश्चात्य संस्कृति की आँधी भी आज हमें पतन की ओर ले जा रही है। विदेशियों के ईमानदारी, स्वच्छता, राष्ट्रभक्ति नियम पालन आदि गुणों को तो हमने ग्रहण नहीं किया, किन्तु उनके उन्मुक्त भोग युक्त जीवन का अनुकरण करके अपने आपको भी पतन के मुँह में धकेल दिया। हमारे खान-पान ने भी हमारे मनों को बिल्कुल बिगाड़ दिया। मांस मदिरा, अंडों आदि तामसिक एवं पाप युक्त पदार्थों के खाने से हमारा मन भी सर्वथा मलिन बन गया। नैतिक शिक्षा के बिना हमारी बुद्धि कुण्ठित हो गई जो इस भोगासक्त उन्मुक्त मन पर नियंत्रण नहीं रख पा रही है। परिणाम स्वरूप हमारी भौतिक उन्नति तो हो रही है किन्तु इसके साथ-साथ ही हम पतन की ओर भी तेजी से भागे जा रहे हैं। **वेद कहता है 'उद्यानं ते पुरुष नावयानम्' हे मानव तेरा लक्ष्य उत्थान है पतन नहीं।**

बी-२६६ सरस्वती विहार, नई दिल्ली - ३४

❑❑❑

महत्वपूर्ण सूचना

पूज्य स्वामी तत्वबोध जी की पुण्य तिथि

२२ जुलाई २०१२ सायं ५.०० बजे

माता लीलावन्ती सभागार, नवलखा महल, उदयपुर में न्यास के संस्थापक अध्यक्ष पूज्य स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती की पुण्य तिथि की पूर्व सन्ध्या पर २२ जुलाई २०१२ को भव्य भजन संध्या में आप सभी सादर आमंत्रित है।

सत्यार्थ-प्रकाश महोत्सव २०१२

५-७ अक्टूबर २०१२ में

सभी आर्य विद्वान्, अधिकारी गण, पुरोहित गण व सत्यार्थ प्रकाश प्रेमियों को सादर आमन्त्रण। आर्यजन अधिकाधिक संख्या में भाग लें।

विशेष आकर्षण- सत्यार्थ प्रकाश पर कार्यशाला

आलस्य त्याग

व्यक्तिगत सामाजिक एवं राष्ट्र के उत्थान में सबसे बड़ा बाधक शत्रु मनुष्य का आलस्य है। किसी भी कार्य को प्रमादवश निरन्तर टालते रहना उसे ना करने के बहाने बनाना ही आलस्य है । कर्महीनता आलस्य का दूसरा नाम है । योगेश्वर कृष्ण ने विषाद में फँसे अर्जुन को महाभारत के युद्ध के लिए अर्थात् कर्तव्य कर्म करने की प्रेरणा देते हुए कर्महीनता को पापाचार की श्रेणी में रखा था । ऋग्वेद में **'अकर्मा दस्युः'** १०/२२/८ का संदेश देकर कर्म न करने वाले आलसी को दस्यु कहा है । वैसे भी आलस्य परमेश्वर के दिए हुए हाथ पैरों का अपमान करना है ।

महर्षि देव दयानन्द भी **आर्योद्देश्यरत्नमाला** में मनुष्य को परिभाषित करते हुए ''मननशील विचारवान होकर कार्य करने वाले को मनुष्य कहते हैं।'' ऐसा लिखते हैं। अर्थात् मननशील होकर कर्म करना मनुष्यता का प्रथम लक्षण बताया गया है । कर्महीन आलसी मनुष्य वा पुरुष कहलाने का अधिकारी नहीं है ।

मनुष्यत्व मनुष्य का, पुरुषार्थ, उद्यम पुरुष का धर्म है । यदि मनुष्य वा पुरुष में से उसके धर्म मनुष्यत्व वा पुरुषार्थ, उद्यम, परिश्रम को निकाल दिया जाए तो ऐसा आलसी व्यक्ति धर्मविहीन होकर मनुष्य के रूप में पशु की भाँति भार बनकर धरती पर विचरण करता है। पाश्चात्य विद्वान् **टेलर** ने आलस्य को जीवित व्यक्ति की मृत्यु बतलाया तो वहीं **सुकरात** ने आलस्य में जीवन बिताना आत्महत्या के समान कहा है। महात्मा गाँधी ने भी ''ईश्वर उसी की सहायता करता है जो अपनी सहायता स्वयं करता है'' कहकर कर्म को प्रधानता दी है ।

हम लोग अपने मन में कर्महीनता वा आलस्य के भी कई बहाने गढ़ लेते हैं जिसमें

१. इन्द्रियों के वशीभूत प्रमादी हो जाना २. कर्म को बंधन का कारण मानकर कर्महीन हो जाना प्रमुख हैं ।

पाणिनी अष्टाध्यायी में मनुष्य को **'स्वतंत्राः कर्त्ता'** कहा गया । महर्षि दयानन्द ने भी कर्त्ता को परिभाषित करते हुए आर्योद्देश्यरत्नमाला में लिखा ''जो स्वतन्त्रता से कर्मों का करने वाला है, अर्थात् जिसके स्वाधीन सब साधन होते हैं वह कर्त्ता कहलाता है । यहाँ स्वाधीन साधन का तात्पर्य स्पष्ट है कि किसी कार्य को करने के लिए आवश्यक साधन कर्त्ता के स्वयं के आधीन हैं । अर्थात स्वतन्त्र वह है जिसका प्राण, इन्द्रिय, अन्तःकरण आदि उसके आधीन है । यदि मनुष्य की इन्द्रियाँ प्राण अन्तःकरण उसके आधीन न हों अपितु मनुष्य स्वयं इन्द्रियों का दास बन जाये तो पह स्वतंत्र नहीं कहलायेगा अपितु वह मन, इन्द्रियों का दास बन जायेगा । अर्थात् ऐसे आलसी प्रमादी, अकर्मा मनुष्य के आधीन साधन नहीं हैं अपितु वह स्वयं उन साधनों के आधीन है। ऐसा आलसी मनुष्य मन इन्द्रियों रूपी घोड़े के पैरों में लगी नाल की भाँति निरन्तर दंड का भागी होता है। अकर्मण्यता वा आलस्य का दूसरा प्रमुख कारण कर्म को बंधन का कारण मान लेना है । जबकि सच्चाई यह है कि परमपिता परमेश्वर सर्वशक्तिमान् न्यायकर्त्ता प्रत्येक मनुष्य के प्रत्येक शुभ वा अशुभ कर्म का पुरस्कार वा दंड नियति भाग्य वा प्रारब्ध के रूप में देते हैं । महाभारतकार भी लिखते हैं **अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्** अर्थात् कर्त्ता होने के नाते हमें अपने प्रत्येक शुभ अशुभ कर्म का फल अवश्य भोगना पड़ता है । इसीलिए वेद भगवान ने **''मा नो निद्रा ईशत मोत जल्पिः**। (ऋग्वेद ८/४८/१४) द्वारा आदेश दिया कि 'आलस्य, प्रमाद और बकवास हम पर शासन न करे ।'

आलस्य वह दीमक है जो मनुष्य को अंदर से खोखला कर देता है । मनुष्य जो भी नित नई योजनाएँ बनाता है वह आलस्य के कारण पूरी नहीं कर पाता । प्रतिकूल हवा का एक झोंका आलसी मनुष्य को खोखले ढूंढ की भाँति गिरा देता है । आलस्य, प्रमाद, अकर्मण्यता को त्यागने और कर्म करने की प्रेरणा देते हुए वेद भगवान कहते हैं **''कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः।''** अर्थात् यदि कर्म मेरे दायें हाथ में है तो विजय मेरे बायें हाथ में रखी हुई है । वैसे भी पूर्ण पुरुषार्थ के उपरांत की गई प्रार्थना को ही ईश्वर स्वीकार करते हैं और बिना पुरुषार्थ की गई प्रार्थना व्यर्थ होती है । ऋग्वेद में कहा गया है **'इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तम्'** (ऋ. ८/२/१८) अर्थात् देवता भी पुरुषार्थी को ही पसन्द करते हैं । **'वा वृधुः सौभगाय।'** (ऋ. ५/६०/५) अर्थात् मनुष्य को सौभाग्यशाली बनने के लिए आलस्य त्याग कर पुरुषार्थ करना चाहिए ।

नरेन्द्र आहूजा 'विवेक' पंचकूला

मो. ०९४६७६०८६८६

❑❑❑

सुदर्शन की कहानी

हार की जीत

माँ को अपने बेटे और किसान को अपने लहलहाते खेत देखकर जो आनंद आता है, वही आनंद बाबा भारती को अपना घोड़ा देखकर आता था। भगवद्-भजन से जो समय बचता, वह घोड़े को अर्पण हो जाता। वह घोड़ा बड़ा सुंदर था, बड़ा बलवान। उसके जोड़ का घोड़ा सारे इलाके में न था। बाबा भारती उसे 'सुल्तान' कह कर पुकारते, अपने हाथ से खरहरा करते, खुद दाना खिलाते और देख-देखकर प्रसन्न होते थे। जब तक संध्या समय सुलतान पर चढ़कर आठ-दस मील का चक्कर न लगा लेते, उन्हें चैन न आता। खड़गसिंह उस इलाके का प्रसिद्ध डाकू था। लोग उसका नाम सुनकर काँपते थे। होते-होते सुल्तान की कीर्ति उसके कानों तक भी पहुँची। उसका हृदय उसे देखने के लिए अधीर हो उठा। वह एक दिन दोपहर के समय बाबा भारती के पास पहुँचा और नमस्कार करके बैठ गया।

बाबा ने पूछा-''कैसे आना हुआ''

''सुलतान की चाह खींच लाई।'' बाबा भारती और खड़गसिंह अस्तबल में पहुँचे। बाबा ने घोड़ा दिखाया घमंड से, खड़गसिंह ने देखा आश्चर्य से। उसने सैंकड़ो घोड़े देखे थे, परन्तु ऐसा बाँका घोड़ा उसकी आँखों से कभी न गुजरा था। सोचने लगा, भाग्य की बात है। ऐसा घोड़ा खड़गसिंह के पास होना चाहिए था। इस साधु को ऐसी चीजों से क्या लाभ?बालकों की-सी अधीरता से बोला, ''परंतु बाबाजी, इसकी चाल न देखी तो क्या?'' दूसरे के मुख स प्रशंसा सुनने के लिए बाबा भारती का हृदय अधीर हो गया। घोड़े को खोलकर बाहर लाए। घोड़ा वायु-वेग से उडने लगा। उसकी चाल को देखकर खड़गसिंह के हृदय पर साँप लोट गया। वह डाकू था और जो वस्तु उसे पसंद आ जाए उस पर वह अपना अधिकार समझता था। उसके पास बाहुबल था और आदमी भी। जाते-जाते उसने कहा, ''बाबाजी, मैं यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा।''

बाबा भारती डर गए। अब उन्हें रात को नींद न आती। सारी रात अस्तबल की रखवाली में कटने लगी। प्रति क्षण खड़गसिंह का भय लगा रहता, परंतु कई मास बीत गए और वह न आया। संध्या का समय था। बाबा भारती सुल्तान की पीठ पर सवार होकर घूमने जा रहे थे। इस समय उनकी आँखों में चमक थी, मुख पर प्रसन्नता। कभी घोड़े के शरीर को देखते, कभी उसके रंग को और मन में फूले न समाते थे। सहसा एक ओर से आवाज आई, ''ओ बाबा, इस कंगले की सुनते जाना।'' आवाज में करुणा थी। बाबा ने घोड़े को रोक लिया। देखा, एक अपाहिज वृक्ष की छाया में पड़ा कराह रहा है। बोले, ''क्यों तुम्हें क्या कष्ट है?''अपाहिज ने हाथ जोड़कर कहा, ''बाबा, मैं दुखियारा हूँ। मुझ पर दया करो। रामावाला यहाँ से तीन मील है, मुझे वहाँ जाना है। घोड़े पर चढ़ा लो, परमात्मा भला करेगा।'' ''वहाँ तुम्हारा कौन है?'' ''दुगार्दत्त वैद्य का नाम आपने सुना होगा। मैं उनका सौतेला भाई हूँ।'' बाबा भारती ने घोड़े से उतरकर अपाहिज को घोड़े पर सवार किया और स्वयं उसकी लगाम पकड़कर धीरे-धीरे चलने लगे। सहसा उन्हें एक झटका-सा लगा और लगाम हाथ से छूट गई। उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उन्होंने देखा कि अपाहिज घोड़े की पीठ पर तनकर बैठा है और घोड़े को दौड़ाए लिए जा रहा है। उनके मुख से भय, विस्मय और निराशा से मिली हुई चीख निकल गई। वह अपाहिज डाकू खड़गसिंह था। बाबा भारती कुछ देर तक चुप रहे और कुछ समय पश्चात् कुछ निश्चय करके पूरे बल से चिल्लाकर बोले, ''जरा ठहर जाओ।'' खड़गसिंह ने यह आवाज सुनकर घोड़ा रोक लिया और उसकी गरदन पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा, ''बाबाजी, यह घोड़ा अब न दूँगा।''

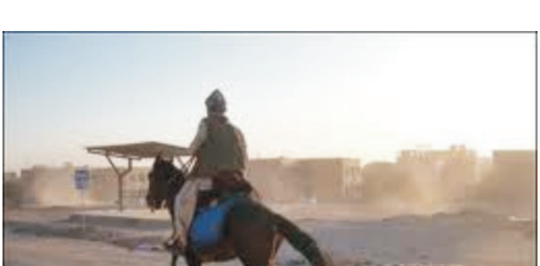

''परंतु एक बात सुनते जाओ।'' खड़गसिंह ठहर गया। बाबा भारती ने निकट जाकर उसकी ओर ऐसी आँखों से देखा जैसे बकरा कसाई की ओर देखता है और कहा, ''यह घोड़ा तुम्हारा हो चुका है। मैं तुमसे इसे वापस करने के लिए न कहूँगा। परंतु खड़गसिंह, केवल एक प्रार्थना करता हूँ। इसे अस्वीकार न करना, नहीं तो मेरा दिल टूट जाएगा।'' 'बाबाजी, आज्ञा कीजिए। मैं आपका दास हूँ, केवल घोड़ा न दूँगा।' 'अब घोड़े का नाम न लो। मैं तुमसे इस विषय में कुछ न कहूँगा। **मेरी प्रार्थना केवल यह है कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।'**

खड़गसिंह का मुँह आश्चर्य से खुला रह गया। उसका विचार था कि उसे घोड़े को लेकर यहाँ से भागना पड़ेगा, परंतु बाबा भारती ने स्वयं उसे कहा कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना। इससे

क्या प्रयोजन सिद्ध हो सकता है? खड़गसिंह ने बहुत सोचा, बहुत सिर मारा, परंतु कुछ समझ न सका। हारकर उसने अपनी आँखें बाबा भारती के मुख पर गड़ा दीं और पूछा, "बाबाजी इसमें आपको क्या डर है?"

सुनकर बाबा भारती ने उत्तर दिया, ''**लोगों को यदि इस घटना का पता चला तो वे दीन-दुखियों पर विश्वास न करेंगे।**''यह कहते-कहते उन्होंने सुल्तान की ओर से इस तरह मुँह मोड़ लिया जैसे उनका उससे कभी कोई संबंध ही नहीं रहा हो। बाबा भारती चले गए। परंतु उनके शब्द खड़गसिंह के कानों में उसी प्रकार गूँज रहे थे। सोचता था, कैसे ऊँचे विचार हैं, कैसा पवित्र भाव है! उन्हें इस घोड़े से प्रेम था, इसे देखकर उनका मुख फूल की नाईं खिल जाता था। कहते थे, ''इसके बिना मैं रह न सकूँगा।'' इसकी रखवाली में वे कई रात सोए नहीं। भजन-भक्ति न कर रखवाली करते रहे। परंतु आज उनके मुख पर दुःख की रेखा तक दिखाई न पड़ती थी। उन्हें केवल यह ख्याल था कि कहीं लोग दीन-दुःखियों पर विश्वास करना न छोड़ दें। ऐसा मनुष्य, मनुष्य नहीं देवता है।

रात्रि के अंधकार में खड़गसिंह बाबा भारती के मंदिर पहुँचा। चारों ओर सन्नाटा था। आकाश में तारे टिमटिमा रहे थे। थोड़ी दूर पर गाँवों के कुत्ते भौंक रहे थे। मंदिर के अंदर कोई शब्द सुनाई न देता था। खड़गसिंह सुल्तान की बाग पकड़े हुए था। वह धीरे-धीरे अस्तबल के फाटक पर पहुँचा। फाटक खुला पड़ा था। किसी समय वहाँ बाबा भारती स्वयं लाठी लेकर पहरा देते थे, परंतु आज उन्हें किसी चोरी, किसी डाके का भय न था। खड़गसिंह ने आगे बढ़कर सुलतान को उसके स्थान पर बाँध दिया और बाहर निकलकर सावधानी से फाटक बंद कर दिया। इस समय उसकी आँखों में नेकी के आँसू थे। रात्रि का तीसरा पहर बीत चुका था।

चौथा पहर आरंभ होते ही बाबा भारती ने अपनी कुटिया से बाहर निकल ठंडे जल से स्नान किया। उसके पश्चात्, इस प्रकार जैसे कोई स्वप्न में चल रहा हो, उनके पाँव अस्तबल की ओर बढ़े। परंतु फाटक पर पहुँचकर उनको अपनी भूल प्रतीत हुई। साथ ही घोर निराशा ने पाँव को मन-मन भर का भारी बना दिया। वे वहीं रुक गए। घोड़े ने अपने स्वामी के पाँवों की चाप को पहचान लिया और जोर से हिनहिनाया। अब बाबा भारती आश्चर्य और प्रसन्नता से दौड़ते हुए अंदर घुसे और अपने प्यारे घोड़े के गले से लिपटकर इस प्रकार रोने लगे मानो कोई पिता बहुत दिन से बिछड़े हुए पुत्र से मिल रहा हो।

बार-बार उसकी पीठ पर हाथ फेरते, बार-बार उसके मुँह पर थपकियाँ देते। फिर वे संतोष से बोले, ''**अब कोई दीन-दुखियों से मुँह न मोड़ेगा।**''

प्रस्तुति-सुरेश पाटौदी

❑❑❑

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थ प्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित

सत्यार्थ प्रकाश (मानक संस्करण) **अवश्य खरीदें।**

प्राप्ति स्थल : श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर - ३१३००१

- अधिकारी वर्ग से विशेष निवेदन-कृपया अपनी संस्था को 'सत्यार्थ-सन्देश' परिवार से अवश्य जोड़े।
- विद्वानों से निवेदन है कि वे केवल सत्यार्थ-सन्देश के लिये लिखे गये अपने संक्षिप्त, सारगर्भित लेख प्रेषित करने की कृपा करें।

पूज्य स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ-प्रकाश सहयोग निधि में १०,००० रुपये का सात्विक योगदान दिया है इस योगदान से सत्यार्थ-प्रकाश की १००० प्रतियाँ लागत मूल्य से भी कम राशि में दी जा सकेंगी। हम स्वामी जी के प्रति आभार प्रकाशित करते हैं।

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके,एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थ प्रकाश (मानक संस्करण) की द्वितीय आवृत्ति छपने में है। कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थ प्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
एक लाख रु.	दस हजार	७५०००	७५००
५००००	५०००	२५०००	२५००
१००००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया,उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास | भंवरलाल गर्ग, कार्यालय मंत्री | डॉ.अमृत लाल तापड़िया, उपमंत्री-न्यास

जिन सज्जनों को यह पत्रिका प्राप्त हुई है, वे तो अवश्य ही 'सत्यार्थ - सन्देश' परिवार से तुरन्त जुड़ने की कृपा करें।

पुनर्जन्म ही तो है सेवानिवृत्ति

सीताराम गुप्ता

लोग प्रायः कहते हैं कि रिटायरमेन्ट के बाद सक्रिय जीवन का अवसान हो जाता है मगर मैं पूछता हूँ कि किसी महीने की अंतिम तारीख तक तो आप एकदम सक्रिय रहे लेकिन अगले महीने की पहली ही तारीख को प्रातः उठते ही आप कैसे निष्क्रिय हो गए?ये वास्तव में हमारी सोच का दोष है। हमारी इसके लिए कंडीशनिंग हो चुकी है। इस स्थिति से उबरना जरूरी है। रिटायर हम नहीं होते रिटायर होता है हमारा कमजोर मन और उसमें उत्पन्न विचार जो हमें रिटायर कर देते हैं।

सेवानिवृत्ति एक महत्वपूर्ण परिवर्तन है। एक नए जीवन की शुरूआत ही नहीं बल्कि पुनर्जन्म है। सेवानिवृत्ति । वैसे तो जीवन में हर नया पल,हर परिवर्तन पुनर्जन्म ही होता है और हम इतनी बड़ी घटना को तटस्थ होकर देख रहे हैं? इसे पुनर्जन्म के रूप में स्वीकार नहीं कर रहे हैं?प्रसव शारीरिक रूप से एक कष्टप्रद स्थिति है लेकिन प्रसव के बाद नारी का पुनर्जन्म ही तो होता है जो अत्यन्त आनन्दप्रद स्थिति है। आप भी रिटायरमेन्टर को प्रसवोपरांत अवस्था के पुनर्जन्म की तरह लीजिए।

एक पुनर्जन्म होता है मरने के बाद, जिसे आज तक किसी ने नहीं देखा। जीते जी भी पुनर्जन्म संभव है लेकिन इसमें भी स्वयं को मारना पड़ता है। यहाँ शरीर को नहीं मारना पड़ता अपितु मारना पड़ता है मन में व्याप्त शंकाओं और नकारात्मक विचारों को। कमजोर करने वाले विचारों से मुक्त होना होता है और उसके स्थान पर मन को आप्लावित करना होता है उत्साहप्रद सकारात्मक सुविचारों से। यही वास्तविक पुनर्जन्म है।

ये हमारी ही मान्यता है कि साठ वर्ष के उपरांत व्यक्ति की कार्यक्षमता कम हो जाती है अतः सेवानिवृत्ति हो जानी चाहिए। परिवर्तन सृष्टि का नियम है। मनुष्य का जीवन भी परिवर्तन से अछूता नहीं रह सकता। रिटायरमेन्ट किसी अवस्था विशेष की स्थिति नहीं है बल्कि रिटायरमेन्ट तो हर क्षण घटित होने वाली स्थिति है। जब भी मौका मिले रिटायर हो जाइए लेकिन अपने कमजोर मनोभावों तथा विकारों से। रिटायरमेन्ट एक परिवर्तन है, एक नई शुरूआत है,एक बेहतर और नए जीवन जीवन की शुरूआत।

नया जीवन वैसे तो हम कभी भी प्रारम्भ कर सकते हैं। जैसे हमें अपना व्यवसाय या सेवा बदलने की पूरी स्वतंत्रता है वैसे ही अपनी जीवनशैली या विचारधारा बदलने की भी पूर्ण स्वतंत्रता है। नया जीवन प्रारम्भ करने की पूरी सुविधा और आजादी है, जब चाहें प्रारम्भ कर लें, जब चाहें पुराने से रिटायर हो जाएँ। हम प्रायः जब तक परिस्थितियाँ मजबूर नहीं करतीं अथवा हमें कोई प्रेरित नहीं करता परिवर्तन से भागते हैं। उसे अस्वीकार करते हैं। परिवर्तन की आवश्यकता अनुभव करते हुए भी उसे स्वीकार नहीं करते। हम स्वयं परितर्वन के विरोधी हैं। जब भी परिवर्तन का अवसर मिलता है हम उसे नकार देते हैं या उसमें कमियाँ निकालना शुरू कर देते हैं। यही हमारी नियति बन गई है। इस स्थिति को बदल डालिये। सेवानिवृत्ति एक उचित अवसर है परिवर्तन के लिए इसका लाभ उठाइये।

कुछ लोग सेवाकाल को एक बन्धन की तरह लेते हैं पर वास्तव में सेवाकाल बन्धन न होकर अनुशासन की स्थिति है और सेवानिवृत्ति के बाद की स्थिति तो अनुशासन के बन्धन से मुक्त होने की अवस्था तो है लेकिन उसके बाद जिस स्थिति की अपेक्षा की जाती है वह है आत्मानुशासन अथवा स्व-अनुशासन की स्थिति। पहले हमारी सोच,हमारी विचार प्रक्रिया तथा हमारी कार्यशैली को कोई दूसरा नियंत्रित करता है लेकिन अब अपनी सोच को,अपने मन को नियंत्रित करना है और ये प्रक्रिया किसी की तरह साधना से कम नहीं है। वह सेवानिवृत्ति ही है जो हमें साधना का भरपूर अवसर प्रदान करती है। 'इट इज ऐन ऑपोर्चुनिटी टू सेल्फ रियलाइजेशन।' सेवानिवृत्ति स्वयं को जानने तथा उत्तरदायित्वों के पुनः आवंटन का अवसर है।

सेवाकाल में संभव है कि आप अपने सेवा संबंधी उत्तरदायित्वों में इस कदर उलझे रहे हों कि आपको स्वयं को जानने व जांचने-परखने का अवसर न मिला हो अथवा आपको अपने लिए अपने परिवार के लिए तथा समाज और राष्ट्र के लिए विशेष कुछ करने का समय न मिल पाया हो। अब आपके पास अपना समय है तथा असंख्य अवसर उपलब्ध हैं। इन अवसरों का सदुपयोग कीजिए जो आज तक नहीं कर पाए आज दिल खोल कर कीजिए। नए जीवन की नए ढंग से जोरदार शुरूआत कीजिए।

आपका जीवनानुभव तो अपरिमित है ही पूरे साठ साल का जीवनानुभव तथा कार्यानुभव । धैर्य का भी आप में अभाव नहीं है। क्योंकि आपने न जाने कितनी विषम परिस्थितियों से जूझते हुए जीवन तथा सेवाकाल को सुचारू रूप से संचालित कर सफलता के मुकाम तक पहुँ चाया है। आप अपने अनुभवों से समाज को एक नई दिशा प्रदान करें । हम सब के लिए प्रेरणास्रोत बनें। आप में अदम्य उत्साह और ऊर्जा है। जरूरत है तो सिर्फ आपको जानने और उसका उपयोग करने की। दुष्यंत कुमार ने ठीक ही कहा है:-

एक चिंगारी कहीं से ढूंढ़ लाओ दोस्तों!
इस दिये में तेल से भीगी हुई बाती तो है।

ए.डी. १०६ सी, पीतमपुरा दिल्ली ११००३४

❑❑❑

गर्मी से बचाव करने वाले पेय

स्वास्थ्य

गर्मी के दिनों में गर्मी से निजात पाने के लिए तथा गर्मी के शरीर पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव से बचने के लिए फ्रिज़ का ठण्डा पानी या कोल्ड ड्रिंक्स आदि के स्थान पर नीचे दिये गये किसी भी पेय का सेवन करना चाहिए क्योंकि ये पेय स्वास्थ्य रक्षक भी हैं और स्वास्थ्यवर्द्धक भी हैं-

मसाला लस्सी-

ताज़ा दही २ कप, बारीक कटा धनिया ४ चम्मच, बारीक कटा हुआ पुदीना २ चम्मच, पिसी सौंफ़ व जीरा १ चम्मच, थोड़ा सा सेन्धा नमक व थोड़ी सी शक्कर। सबसे पहले दही को अच्छे से मल लें। यदि दही गाढ़ा हो तो उसमें आवश्यकतानुसार पानी मिला लें। फिर इसमें सारे पदार्थ मिलाकर अच्छे से मिला लें। गर्मी में बाहर निकलने से पहले इस लस्सी का एक गिलास सेवन करें।

आम पना- ५-६ मध्यम आकार के कच्चे आम (केरी), शक्कर ६ चम्मच, सेन्धा नमक १ चम्मच, काला नमक आधा चम्मच, जीरा पाउडर २ चम्मच, बारीक कटा हुआ पुदीना ४ चम्मच, लाल मिर्च पाउडर आधा चम्मच या कटी हुई हरी मिर्च २-३ (ऐच्छिक)। कच्चे आमों को छील कर बर्तन में १५ से मिनिट २० धीमी आंच पर पकाएँ। फिर इनके गूदे को उसी पानी में अच्छे से मसल लें तथा सारे पदार्थ उसमें डालकर मिक्सर में पीस लें। यह मिश्रण फ्रिज़ में रखने पर काफी दिनों तक खराब नहीं होता है। जब भी आम पना पीना हो तब इसको एक गिलास में एक चौथाई भरे तथा उसमें बर्फ़ के टुकड़े डाल कर पानी से पूरा गिलास भर दें। अच्छे से मिलाकर सेवन करें।

पुदीना तरबूज

तरबूज के बीज निकले हुए छोटे टुकड़े ३ कप, कटा हुआ पुदीना आधा कप, शक्कर ३ चम्मच, काला नमक एक चम्मच। तरबूज के टुकड़े पुदीना, नमक व शक्कर को अच्छे से मिलाकर मिक्सर में धुमा लें। फिर इसे इस गिलास में बर्फ़ डालकर सेवन करें। यह शीतलता देने के साथ-साथ खनिज लवणों की आपूर्ति कर गर्मी में भी तरोताजा रखता है।

साभार-निरोग धाम

समाचार

वैदिक संस्कृति प्रशिक्षण शिविर सम्पन्नन्यास द्वारा आयोज्य पञ्च दिवसीय शिविर दिनांक ६ जून २०१२ को सम्पन्न हुआ। समापन समारोह की अध्यक्षता न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने की। इस अवसर पर आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक ने मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए जीवन में सत्य के आचरण पर विशेष बल दिया। उन्होंने रेखाकिंत किया कि महर्षि दयानन्द ने जब आर्य समाज के नियम बनाए तो प्रथम पाँच नियमों में सत्य का प्रयोग हुआ है। शिविर में सभी सत्रों में बौद्धिक प्रदान करने का कार्य आर्य जगत् के

प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य वेद प्रिय शास्त्री ने सँभाला। शास्त्री ने धर्म के स्वरूप को विमोचित करते हुए कहा कि मनु के अनुसार क्रमिक रूप में वेद, स्मृति , महापुरुषों के सदाचार धर्म को निरूपित करते है। तत्पश्चात जो स्वयं की आत्मा को प्रिय हो वही धर्म है। शिविर के संचालन में न्यास मन्त्री श्री भवानीदास आर्य, कार्यालय मन्त्री श्री बी.एल. गर्ग, उप मन्त्री प्रा. अमृतलाल तापड़िया, कोषाध्यक्ष श्री नारायण मित्तल व संयोजक श्री सुरेश मित्तल की महती भूमिका रही। योग प्रशिक्षण योगाचार्य डॉ. नरेन्द्र सनाढ्य के द्वारा दिया गया। श्री जीवन लाल, श्री देवीलाल, श्री हमेर चन्द्र ने शिविर संचालन की महती भूमिका का निर्वहन किया।

– नवनीत आर्य पुरोहित

प्रवेश प्रारम्भ

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय (सासनी) हाथरस

कन्या गुरुकुल, महामायानगर उ.प्र. में शिक्षा प्ले ग्रुप से लेकर वेदालंकार/विद्यालंकार (बी.ए.) तक प्रथमा(८) से लेकर आचार्य (एम.ए.) तक, विद्याविनोद (समकक्ष इण्टर) तक विज्ञान वर्ग की भी शिक्षा। प्रयाग संगीत समिति, गायन, वादन में प्रभाकर (बी.ए.) तक, आई.टी.आई.कोपा (कम्प्यूटर), कटाई सिलाई ट्रेड की एन.सी.वी.टी द्वारा मान्य व्यावसायिक शिक्षा। प्ले ग्रुप से समकक्ष बी.ए. तक अन्य विषयों के साथ-साथ हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी तीनों भाषायें। सुरम्य प्राकृतिक, रमणीक, विस्तृत भूखण्ड में कन्याओं को संस्कारवान् करने का यत्न। गुरुकुल आगरा-अलीगढ़ राष्ट्रीय मार्ग सं. ६३ पर सासनी-हाथरस के मध्य स्थित। रु. १५०.०० भेजकर नियमावली मंगावें। शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में आर्थिक दृष्टि से निर्बल १०१ कन्याओं को भोजन शुल्क में कुछ छूट स्थान सीमित, तुरन्त संपर्क कर सीट आरक्षित करावें।

Website: www.sites.google.com/site/kgurukulsasni

– सविता वेदालंकार – प्राचार्या दूरभाष ०५७२२-२२०११६

दान हेतु अपील

मान्यवर,

महर्षि दयानन्द के निर्वाण को लगभग १३५ वर्ष हो चुके हैं। अजमेर की भिनाय कोठी में उन्होंने अपने जीवन की अंतिम सांस ली। यह स्थान अब तक आर्यों की ओर से उपेक्षित पड़ा रहा। अब उस पर महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.) की ओर से निगाह गई और वे उसको एक भव्य स्मारक के रूप में बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं। उनकी इच्छा है कि इस स्मारक में सभी प्रतिनिधि सभाओं,संस्थाओं एवं आर्यों का दिल खोल कर योगदान हो और सभी महर्षि को अपनी श्रद्धांजलि दें। निर्माण कार्य प्रारम्भ हो गया है। और आपसे प्रार्थना है कि आप अपना आर्थिक योगदान सीधा निर्वाण न्यास के बैंक कोड नं. बीकेडीन ०७१०७१४ एवं खाता संख्या ०७१४१०००१६४५ में भेजने की कृपा करें और साथ ही निर्वाण न्यास को पत्र भेज दें ताकि उसकी रसीद आपको भेज सकें। यदि आप चाहें तो अपना योगदान चैक द्वारा मेरे पते पर भी भेज सकते हैं। मैं समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं के प्रधानों व आर्यों से निवेदन करूंगा कि वे इस पुनीत कार्य हेतु अधिक से अधिक योगदान देने की कृपा करें। आप अपना सहयोग यथाशक्ति करने का प्रयत्न करें। दान राशि कम या ज्यादा इतना महत्व नहीं रखती,महत्व इस बात का है कि आप जब कभी निर्वाण स्थली अजमेर पर आयें तो गर्व का अनुभव करें कि महर्षि के इस स्मारक में मेरा भी योगदान है।

– कैप्टन देवरत्न आर्य-प्रधान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,दिल्ली
'वैदिक विहार'-२८ वसन्त विहार कॉलोनी, धोलाभाटा, अजमेर ३०५००७
फोन ०१४५-२६६३४५६, मोबाइल ९९८३३३९७००

गायत्री व महामृत्युन्जय मन्त्र के पोस्टर भेंट

आर्य समाज, भीमगंज मण्डी, कोटा जं. के पूर्व मन्त्री श्री राजेन्द्र आर्य द्वारा गायत्री महामन्त्र तथा महामृत्युन्जय मन्त्र के पोस्टर अर्थ सहित भारत विकास परिषद चिकित्सालय तथा श्रीराम धमार्थ चिकित्सालय

को भेंट किये गये। इस समारोह में भारत चिकित्सा परिषद के अध्यक्ष श्री श्याम जी शर्मा ने आर्य जी को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि इन मन्त्रों को बहुत बार सुना परन्तु इनके अर्थ का ज्ञान आज इस पोस्टर द्वारा हुआ है कि मनुष्य को खरबूजे की भाँति ये शरीर पक जाने पर स्वतः आनन्द पूर्वक छोड़ देना चाहिये। इससे अस्पताल में मरीजों को भी प्रेरणा मिलेगी। इस अवसर पर मन्त्री श्री अरविन्द जी, पूर्णिमा सत्संग समिति संयोजक श्री राजेन्द्र सक्सेना, अध्यक्ष श्री प्रेमनाथ कौशल, मनोज कुमार व ऋषि गाथा की गायिका श्रीमती समिधा व सुमेधा आर्या भी उपस्थित थीं। राजेन्द्र आर्य ने कहा कि निश्चित रूप से इन मन्त्रों द्वारा चिकित्सालय में आये मरीजों को शान्ति प्राप्त होगी।

– राजेन्द्र कुमार आर्य, कोटा

प्राकृतिक विविधता
आर्य का उम्मीदों वाला जादुई कुँआ
बर्फीले सियाचिन में गुनगुना पानी

उत्साह जगा देने वाली खुशखबरी यह है कि सियाचिन ग्लेशियर पर जहाँ तापमान शून्य से चालीस डिग्री सेल्सियस नीचे चला जाता है वहाँ हाइड्रोजियोलोजिस्ट (जल भूविज्ञानी) और ऊँचे स्थान पर अनुसंधान कार्य करने में गहन अनुभव रखने वाले ४४ **वर्षीय रितेश आर्य** ने १६ अप्रैल को सियाचिन बेस कैम्प स्थित सैनिकों को यह नायाब तोहफा दिया। उस दिन उन्होंने तीन हजार पाँच सौ चालीस मीटर की ऊँचाई पर उष्ण जलस्रोत की अविश्वसनीय खोज की थी। इस बारे में श्री आर्य का कहना है ' यह एक सपने के साकार होने जैसा है' किसी ने सोचा भी नहीं था कि जमा देने वाली इस सर्दी में इन ऊँचाइयों पर ड्रिल करने से गर्म पानी का स्रोत भी मिल सकता है। लेकिन मुझे भरोसा था कि यह संभव है।

शाबाश गगन गीत कौर

सर्वव्यापी, सर्वग्रासी भ्रष्टाचार से व्याप्त परिवेश में समर्पण करते लोगों के मध्य कभी कभी कुछ जुझारू ईमानदार व्यक्तित्वों के दर्शन भी हो जाते हैं। इन्हीं में से एक हैं पंजाब एवं हरियाणा हाइकोर्ट में सहायक महाधिवक्ता रह चुकी पंजाब की गगन गीत कौर । उत्तर प्रदेश में अतिरिक्त जिला न्यायाधीश के पद के लिए उच्च न्यायालय ने गगन गीत के नाम की सिफारिश की थी फिर भी राज्य के आला अधिकारियों ने उनसे रिश्वत की माँग की। गगनगीत ने इसका प्रतिरोध किया। परन्तु कई दरवाजे खटखटाने के बावजूद जब कुछ नहीं हुआ तो बजाय खुद समर्पण के उन्होंने अपनी सीट सरेण्डर कर दी। **गगन गीत का कहना है कि वे भ्रष्ट बनकर न्याय देने वाली कुर्सी पर नहीं पहुँचना चाहती।**

शोक-संवेदना
श्री देवानन्द (हालैण्ड) को पितृशोक

हमारे अत्यन्त प्रिय, ऋषि-मिशन को सर्वात्मना समर्पित वैदिक मिश्नरी, श्री देवानन्द जी के पूज्य पिताजी के निधन के दुःखद समाचार से हम सभी ने गहन पीड़ा की अनुभूति की है। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान दें तथा दुःखी परिवारीजनों को धैर्य धारण करने की क्षमता प्रदान करें। सत्यार्थ-सौरभ परिवार की ओर से संवेदना स्वीकार करें।

– अशोक आर्य

श्री रघुराज सिंह कर्णावत

श्री भैरोंलाल शर्मा

आर्य समाज महर्षि दयानन्द नगर, तलवण्डी (कोटा) के नवीन निर्वाचनों में श्री रघुराज सिंह कर्णावत को सर्व सम्मति से प्रधान, श्री भैरोंलाल शर्मा को मंत्री एवं श्री आरसी आर्य को कोषाध्यक्ष पद पर निर्वाचित किया गया। हमें विश्वास है कि श्री रघुराज सिंह कर्णावत व श्री भैरोंलाल शर्मा के नेतृत्व में आर्य समाज की गतिविधियाँ सुचारु रूप से चलती रहेंगी। नवनिर्वाचित अधिकारियों को सत्यार्थ-सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

प्रतिस्वर

सत्यार्थ संदेश का अंक अवलोकन का सुअवसर मिला। मेरे राम तथा राजनीतिक हनुमान जैसे उदात्त आदर्शों के आलेखों से अत्यन्त प्रभावित हुआ। 'वेदसुधा' पत्रिका का प्राणतत्व है। प्रत्येक पृष्ठ की विषय वस्तु दिव्य ज्ञान तथा सद् साहित्य से परिपूर्ण है। पत्रिका निःसंदेह प्रशंसनीय, मननीय तथा पठनीय है। अमित शुभकामनाओं सहित

शिष्ट शालीन सत्यार्थ संदेश है। ज्ञान साहित्य मंगल उपदेश है।
इसका मुद्रण प्रकाशन रुचिर श्रेष्ठ है। आर्यजन के लिए भेंट अनिमेष है।

– गौरीशंकर वैद्य विनम्र, ११७ आदित्य नगर, लखनऊ २२६०२२

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास की पत्रिका सत्यार्थ संदेश के अंक मिले। पत्रिका दर्शनीय, पठनीय, मुद्रण तथा कागज अति सुन्दर हैं। पत्रिका महर्षि दयानन्द जी के द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश - शिक्षाओं को प्रसारित कर रही हैं। वेद मंत्रों की व्याख्या भी आपने बहुत अच्छी दी है। इसमें आप सत्यार्थ प्रकाश को धारावाहिक के रूप में हर अंक में अवश्य छापें, जिससे ऋषि दयानन्द का कार्य और अधिक रूप से चले। इसके लिए आप सभी बहुत बधाई के पात्र हैं। आशा है आप आगे भी इस कार्य को ऐसे ही चलाते रहेंगे।

– संजीव आर्य, आर्य प्रकाशन, अजमेरी गेट, दिल्ली

हम सत्यार्थ प्रकाश न्यास,उदयपुर को साधुवाद एवं आपको शुभकमानायें प्रेषित करते हैं किः-

१. सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर के सफलतम् प्रयास के पश्चात् आर्य जगत् के शीर्षस्थ विद्वान् आचार्य विशुद्धानन्द जी की अध्यक्षता में गठित विद्वत् समिति ने सत्यार्थ प्रकाश की मौलिकता को बरकरार, सुरक्षित करके मानक संस्करण का प्रकाशन कराया गया। हमने संस्करण को निःशुल्क वितरण करवाया है। हमको आर्यजनों का हार्दिक धन्यवाद प्राप्त हुआ है।
२. जनवरी २०१२ से प्रकाशित सत्यार्थ-संदेश पत्रिका के लिए आपने स्वामी तत्त्वबोध जी सरस्वती का सच्चा श्राद्ध तर्पण किया है उनके स्वप्न को पूर्ण किया है।

परमपिता परमात्मा आपको दीर्घायु करें। आपकी त्याग तपस्या से यह कार्य बढ़ता ही जायेगा ।

– ओ.पी.वर्मा, प्रधान, आर्य समाज किशनपोल बाजार जयपुर

श्री आर्य रामअवतार यादव

श्री रामेश्वर प्रसाद सैनी

श्री जे. डी. त्यागी

आर्य समाज रामनगर, रुड़की (हरिद्वार) के नवीन निर्वाचनों में श्री आर्य रामअवतार यादव को सर्व सम्मति से प्रधान, श्री रामेश्वर प्रसाद सैनी को मंत्री एवं श्री जे. डी. त्यागी को कोषाध्यक्ष पद पर निर्वाचित किया गया। हमें विश्वास है कि श्री आर्य रामअवतार यादव व श्री रामेश्वर प्रसाद सैनी के नेतृत्व में आर्य समाज की गतिविधियाँ सुचारु रूप से चलती रहेंगी। नवनिर्वाचित अधिकारियों को सत्यार्थ-सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

झूठ बोलने वाला स्वयं को ही धोखा देता है

खुशहाल चन्द्र आर्य

झूठ बोलने वाला दूसरों को तो धोखा देता ही है साथ ही वह अपने आप को भी धोखा देता है। झूठ बोलने वाला समझता है कि मैंने अपने आप का लाभ किया है परन्तु यथार्थ में उसने अपने आप को नुकसान पहुँचाया है, कारण झूठ तो किसी एक दिन पकड़ा ही जायेगा उस दिन उसको बेइज्जत होना पड़ेगा और जितने रुपयों की बेईमानी झूठ बोलकर की थी वे वापस देने पड़ेंगे। इससे पहले उसको अपना झूठ छिपाने के लिए अनेकों बार झूठ बोलना पड़ा होगा, तब उसकी आत्मा ने उसको जितना कोसा होगा और उसकी आत्मा ने कितना कष्ट उठाया होगा, उस हानि का तो कोई अन्दाज ही नही लगा सकते। जिससे उसने बेईमानी की होगी या झूठ बोला होगा, वह आदमी जब-जब भी उसको दिखाई दिया होगा, तब-तब उसके प्राण सूख गये होंगे और उससे बच-बच कर निकलना पड़ा होगा जब तक वह बात पुरानी न पड़ गई होगी। कहने का तात्पर्य यह है कि यदि वह झूठ पकड़ा न भी जावे तब भी उसके मन में बने भय के कारण उसके लाभ से कितनी गुणा हानि हुई होगी उसका अन्दाज लगाना मुश्किल है। जिसको झूठ बोलकर ठगा था, वह तो कुछ नुकसान सहकर उसको भूल जाता है, परन्तु झूठ बोलने वाले को मानसिक व आत्मिक पीड़ा बहुत दिनों तक सहनी पड़ती है। इस बीच यदि झूठ पकड़ा गया तो उस हानि का कोई अन्दाज ही नहीं।

सच तो यह है कि झूठ बोलना सब दुर्गुणों की जड़ है। कारण झूठ बोलने से ही हर व्यक्ति मानो दुर्गुणों, दुर्व्यसनों को आमन्त्रित करता है। झूठ बोलने से ही चोरी करना, जूआ खेलना, शराब पीना यहाँ तक कि वैश्यागमन करना सभी दुर्व्यसन आने आरम्भ हो जाते हैं और अन्त में उसको विनाश तक पहुँचा देते हैं। झूठ बोलना वह सीढी है जिससे मनुष्य नीचे की ओर जाता है और अन्त में पतन के गर्त में गिर कर नष्ट हो जाता है। सत्य बोलना वह सोपान है जो मनुष्य को ऊपर की ओर ले जाता है और एक महान् पुरुष बना देता है। यदि हम महान् पुरुषों के जीवन का अध्ययन करें तो उनकी उन्नति का कारण अन्य गुणों के साथ सत्य बोलना निश्चित ही मिलेगा। झूठ बोलने वाला कभी उन्नति नहीं कर सकता। सत्य बोलने वाला उन्नति क्यों करता है उसके पीछे कारण यही है ऐसा व्यक्ति कभी किसी को धोखा नही देगा, न किसी से बईमानी करेगा और न कोई अन्य बुरे कर्म करेगा जिससे उसकी इज्जत बढ़ती जायेगी और फिर वह जो भी काम करेगा, सफलता उसके पैर चूमेगी। एक कहानी से इस बात की पुष्टि करते हैं।

एक चोर अपनी लाचारी से चोरी करता था, पर उसका मन बड़ा दुखी रहता था। वह छोड़ भी नहीं सकता था, कारण पहली बात तो यह थी कि उसके घर की परिस्थिति अच्छी नहीं थी। दूसरी बात यह थी कि वह चोरी करने का अभ्यस्त हो चुका था। चोरी करना उसका व्यसन बन चुका था। इस परिस्थिति में उसको चोरी करनी ही पड़ती ही थी। पर वह दुखी अवश्य रहता था। एक दिन वह किसी अच्छे साधु के पास गया और उसको अपनी सारी व्यथा सुना दी, और बोला, महात्मा जी! आप किसी प्रकार से भी मेरी चोरी करना छुड़ा दो। साधु बड़ा अनुभवी और तत्वज्ञानी था। वह चोर के पूरे स्वभाव को समझ गया और उसने कहा श्रीमान् जी! आप चाहे चोरी करते रहो, पर झूठ कभी न बोलना। इस कठोर तप से ईश्वर की कृपा से कभी न कभी तुम्हारा भाग्य अवश्य ही रंग लावेगा और तुम्हारे भाग्य के बन्द पट किसी दिन अवश्य खुल जायेंगे। चोर ने साधु के सामने ही यह प्रतिज्ञा कर ली कि मैं आज के बाद कभी भी झूठ नहीं बोलूंगा। वह एक दिन चोरी करने के लिए राजा के खजाने में घुस गया। वहाँ उसको पाँच मोहरें रखी मिलीं, पर उसने चार मोहरें उठा लीं और एक मोहर वहीं छोड़ दी और चलता बना। दूसरे दिन राजा के मन्त्री ने खज़ाना देखा तो वह क्या देखता है कि पाँच मोहरों में से केवल एक मोहर वहाँ रखी है, बाकी चार मोहरें किसी ने चुरा ली। राजा के मन्त्री के मन में पाप आ गया। उसने सोचा कि सभी लोग यही समझेंगे कि चोर ने ही पाँचों मोहरें चुरा ली हैं, मुझ पर कोई

अविश्वास नहीं करेगा और उसने वह एक मोहर अपनी जेब में रख ली। मन्त्री ने राजा से कहा कि राजन्! आज रात को खजाने में चोरी हो गई और पाँचों मोहरें किसी ने चुरा लीं। राजा ने भी खज़ाना देखा तो पाँचों मोहरें गायब थीं। पूरे राज्य में चोर की तलाश होने लगी और चोर पकड़ लिया गया और उसको राजा के सामने हाजिर किया गया।

चोर ने राजा से कहा कि महाराजा! आपके खज़ाने में मैंने ही चोरी की है, परन्तु मैंने पाँच मोहरें देखी जरूर थी, पर मैंने चार मोहरें उठा लीं और एक मोहर वहीं छोड़ दी। मैंने एक साधु के सामने झूठ न बोलने की प्रतिज्ञा कर रखी है। चोरी जरूर करता हूँ परन्तु झूठ कभी नहीं बोलता। मन्त्री भी वहीं खड़ा था। चोर की बात सुनकर मन्त्री के पसीना आ गया। जब राजा ने मन्त्री को देखा तो वह थर-थर काँप रहा था। राजा समझ गया कि एक मोहर मन्त्री ने ही ली है। राजा ने उसी समय कहा कि आज से मेरा मन्त्री यह चोर होगा। जब यह कभी झूठ नहीं बोलता है तो यह ईमानदार भी होगा, साथ ही चरित्रवान भी होगा इसलिए इसके मन्त्री काल में मेरा राज्य भी सुचारू रूप से चलेगा और सारी प्रजा सुखी रहेगी। राजा ने मन्त्री से कहा आज से तुम्हारी छुट्टी, तुम अपने घर जाओ। चोर ने मन्त्री वाला सारा भार सम्भाल लिया। यह है सत्य बोलने का फल। मैंने सन् १९७३ में पूज्य स्व. भाई प्रकाश चन्द्र से अलग गद्दी गोविन्द राम आर्य एण्ड सन्स के नाम से १८० महात्मा गांधी रोड़ में की थी, तब यह व्रत लिया था कि मैं कभी झूठ नहीं बोलूँगा, कभी किसी को धोखा नहीं दूँगा और दूसरों की तकलीफ को अपनी तकलीफ समझूँगा। ईश्वर की कृपा से मुझे व्यापार में काफी सफलता मिली और काफी बुराईयों से भी बचा रहा। धन और यश भी काफी कमाया। ईश्वर की कृपा से मैं अब काफी सुखी हूँ। मैं सभी सुधि पाठकों से निवेदन करता हूँ कि वे भी सत्य बोलने का अभ्यास करें तब आप स्वयं अनुभव करोगे कि आपका जीवन कितना सफल होता जा रहा है और आपको एक विशेष आनन्द की अनुभूति भी होगी। सत्य के सम्बन्ध में एक मन्त्र द्वारा वेद भी यही कहता है कि यह पृथ्वी सत्य पर टिकी हुई है। इसका तात्पर्य यह हुआ कि संसार के सभी काम नित्य व्यवहार करने से चलते हैं। हमें भी वेद माता की आज्ञा का पालन करना चाहिए। सत्य के सम्बन्ध में लेखक ने भी दो पंक्तियाँ लिखी हैं।

सत्य बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप। झूठ एक विष है, जिससे बोलने वाला ही मरता आप।।

- महात्मा गांधी रोड(दो तल्ला) कोलकता-७००००७

❑❑❑

अद्भुत स्वयंवर **विवाह करना है तो सत्यार्थ प्रकाश पढ़िये** १५ अगस्त २०१२ को

आर्यावर्त का इतिहास गवाह है कि प्राचीन काल में स्वयंवर होते थे। प्रायः स्वयंवरों में कोई शर्त रखी जाती थी जिसे पूर्ण करने वाले का वरण कन्या द्वारा किया जाता था। १५ अगस्त १२ में स्वतंत्रता दिवस के दिन गुजरात के सूरत शहर में एक आर्य परिवार में एक अद्भुत स्वयंवर रचा जा रहा है। प्रत्याशी वर से सत्यार्थ प्रकाश के आधार पर प्रश्न किए जायेंगे । शत प्रतिशत सही उत्तर देने वाले के गले में वरमाला कन्या द्वारा डाली जावेगी। द्वितीय स्थान पर आने वाले को १४ हजार रु नकद व प्रमाण पत्र तथा तृतीय स्थान पर आने वाले को १० हजार रु तथा प्रमाण पत्र। सान्त्वना पुरस्कार पांच हजार रु.।

इच्छुक वर की न्यूनतम अर्हता आयु न्यूनतम २५ वर्ष, निर्व्यसनी, स्वस्थ, कॉलेज गुरुकुल तक शिक्षा, घर का मकान, संयुक्त परिवार, पर्याप्त मासिक आय, रंग रूप अच्छा।

आवेदन प्राप्त होने पर परीक्षोपरांत जिन्हें निमंत्रित किया जावेगा वे ही प्रतिभागी होंगे।

संपर्क सूत्र - जयन्ती भाई प्रजापति आर्य ३०४ तकारेश्वर कृपा अपार्टमेन्ट मगन नगर, वी-२, कतार ग्राम सूरत ४,
मोबाइल नम्बर ९६३८१२१२६६

प्रस्तुति-स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, वेद मंदिर, सायला,जिला सुरेन्द्रनगर (गुज.)

न्यास द्वारा समस्त संस्कारों हेतु समुचित व्यवस्था

जीवन में उदात्त नैतिक मूल्य स्वयमेव स्थापित नहीं होते, भागीरथ प्रयत्न करना होता है। भारतीय मनीषा ने इस हेतु १६ संस्कारों का विधान किया है। जो प्रत्येक गृहस्थ को करवाने चाहिए। कई सज्जनों को लगता है कि यह कठिन तथा व्यय-साध्य कार्य है। हमारा निवेदन है कि ऐसा कुछ नहीं है। संस्कार चित्त-प्रसाद-अभिवृद्धि का हेतु है। आप केवल दूरभाष पर अपनी अभिलाषा बतावें। न्यास के पुरोहित पंडित नवनीत आर्य सारा कार्य, स्वतः व्यवस्था कर सुन्दरता से सम्पन्न करायेंगे।

दूरभाष : ०२६४-२४१७६६४, चलभाष ०९३१४५३५३७६

कृपया न्यास की वेबसाईट : www.satyarthprakashnyas.org पर अवश्य देखें

पत्रिका से सम्बन्धित किसी प्रकार की जानकारी/शिकायत के लिये निम्न चलभाष पर सम्पर्क करें।
०९३१४५३५३७६

प्रत्येक माह की 20 तारीख तक भी पत्रिका न मिलने पर कृपया इसी चलभाष पर सम्पर्क करें।

वेद कुमार दीक्षित

आओ सोचें और बदल डालें

जब भी कभी मैं समाचार पत्रों में पढ़ता हूँ कि किसी संगठन विशेष के इतने हजार सेवादारों ने पूरे शहर को एक साथ स्वच्छ कर दिया या वैष्णोदेवी जाने वाले भक्तों के लिए अमुक व्यक्ति अथवा संस्था ने निःशुल्क भोजन की व्यवस्था कर रखी है या अमुक नाम वाली एनजीओ संस्था ने पशु-पक्षियों को बचाने के लिए व्यापक अभियान छेड़ रखा है अथवा किसी और ने धरती की हरीतिमा लौटाने के लिए कमर कस रखी है ।

कोई निरन्तर घट रहे भूजल से चिन्तित होकर जल संरक्षण के मिशन पर सक्रिय है। कुछ लोग पेट्रोल डीजल की खपत देखते हुए ऊर्जा का विकल्प खोजने में जुटे हैं। इत्यादि। और भी बहुत सी ध्यानाकर्षण करने वाली घटनाएँ पढ़ने व देखने सुनने में आती हैं तो मन में एक हूक सी उठती है तथा बड़ा खेद होता है और सोचता हूँ कि अब हम आर्यों और हमारे समाज को भी थोड़ा सा बदल जाने की जरूरत है।

बहुत सारे मुद्दे जिन्हें लेकर आर्य समाज का गठन किया गया था काफी हद तक पूरे हो चुके हैं। कुछ मुद्दे अन्य संस्थाओं द्वारा अधिग्रहीत कर लिए गए हैं और कुछ अभी पूरे करने बाकी हैं। लेकिन 'संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है' के संदर्भ में हम कहीं न कहीं पिछड़ रहे हैं। मैं यह नहीं कह रहा कि आर्य संस्थाएँ बिल्कुल निष्क्रिय हैं। यहाँ भी कुछ न कुछ नया होता रहता है। इसमें भी कुछ उत्साही लोग हैं। पर पिष्टपेषण अधिक है। वेद और वेदांग आदि शास्त्रों की गठरी सिर पर लादे हुए हम संसार/समाज, राष्ट्र, प्रदेश, गाँव व गली मुहल्ले का कितना उपकार कर पा रहे हैं? यह बात विचारणीय है।

आज समय के साथ नई समस्याएँ, नई चुनौतियाँ हमारे सामने खड़ी हैं। हमें उनसे लड़ना है, उनका समाधान खोजना है। इस कड़ी में सर्वप्रथम हमें अपने संगठन को फिर से सुदृढ़ करना होगा। आलोचना प्रत्यालोचनाओं से बचकर लोगों को अधिक से अधिक समाज से जोड़ना होगा। 'एकला चलो' की नीति त्यागनी होगी। आर्य समाज के पास बहुत कुछ अच्छा है पर यह मान लेना कि अन्यों के पास जो है वह सब खराब है,बहुत बड़ी भूल है। बाहर जो श्रेष्ठ बिखरा पड़ा है हम उससे आँखे न फेरें। अपनी अच्छी बातें देने के साथ अन्यों से भी अच्छी बातें लेवें। हमें श्रेष्ठ सामाजिक प्रबन्धन को अपनाने की आवश्यकता है। दूसरी जरूरत हमारे विद्वानों/उपदेशकों व भजनोपदेशकों के विषय प्रस्तुतीकरण में ठोस बदलाव की है। हम जो भी उपदेश करें हमारा स्वयं का आचरण भी यथासम्भव वैसा ही हो। विषय में दक्षता और प्रस्तुति की शैली में सुधार करना होगा। यद्यपि यह बात सभी के लिए लागू नहीं है पर बहुतों पर तो लागू हो सकती है। हमारा अभिप्राय किसी को निन्दित करने का नहीं है।

आज हम अन्तःकलह से तो ग्रस्त हैं ही, अन्य संगठनों व सामान्य जनता से भी अलग-थलग पड़ गए हैं । हमारे पास सबसे अच्छा जीवन दर्शन है। सबसे अच्छी शिक्षा प्रणाली है। फिर भी हम अपनी पहचान खोते जा रहे हैं। निःसंदेह ऋषि दयानन्द केवल हमारे नहीं हैं पर हम उन्हें जन-जन का भी तो नहीं बना पाये। हमें गौरवमय अतीत की आत्म-मुग्धता से बाहर आना ही होगा। हमें करने के लिए बहुत कुछ है। इतने बड़े राष्ट्र में कहीं प्राकृतिक आपदायें हैं कहीं दुर्घटनाएँ और उपद्रव आदि हैं। साथ में भ्रष्टाचार, महंगाई, कालाधन, विदेशी कम्पनियों की लूट, आरक्षण की आग आदि अनेक समस्यायें सिर उठाती रहती हैं। इनके समाधान में, बेरोजगारी दूर करने में, स्वच्छ शासन व प्रशासन उपलब्ध कराने आदि कार्यों में हम क्या सहयोग कर रहे है? आर्य समाज अपनी कैसी व कितनी भूमिका निभा रहा है इन सबका भी हमें ध्यान रखना होगा और पूर्ण योगदान देना होगा।

राष्ट्रभाषा हिन्दी, धारा ३७०, आरक्षण नीति, लोकपाल बिल आदि अनेक मुद्दों पर हमें बोलने आन्दोलन करने व विरोध करने का पूरा अधिकार है। पर हम संगठित रूप में कुछ कहने व करने से पता नहीं क्यों डरते हैं। प्रतीत होता है कि सभी

समस्याओं के आगे हमने समर्पण कर दिया है। यह स्थिति बदलनी होगी। यदि राष्ट्र को दिशा हम नहीं देंगे व राष्ट्र रक्षा के प्रति हम तैयार नहीं होंगे तो कौन होगा?

बार बार यह बात मन को कचोटती है कि आर्य समाज में पले बढ़े युवक युवतियों और बच्चों के सुरक्षित व उज्ज्वल भविष्य के लिए आर्य समाज कुछ क्यों नहीं कर रहा है, जैसा व जितना अन्य संस्थायें करती हैं। यद्यपि हम वर्गवाद में विश्वास नहीं करते लेकिन अनेक वर्ग अपने-अपने बच्चों के लिए संगठित प्रयास करते हैं। चाहे छात्रावास सुविधा हो, छात्रवृत्ति हो, कोई व्यवसाय की बात हो या विवाह आदि की वे अपने वर्ग के बच्चों को पूरा सहयोग करते हैं। हमें भी इस दिशा में नये तरीके से गम्भीरतापूर्वक सोचना होगा। हम विश्व को आर्य बनाने की बात तो करते हैं लेकिन व्यवहार में हमसे अच्छा परिवार भी नहीं बन पाता। यहाँ तो पिता आर्य समाजी हैं तो माता पौराणिक हैं और बच्चे कोई समाजी नहीं। वे असामाजिक हैं। आर्य संस्थाओं में युवक-युवतियाँ ढूंढ़े नहीं मिलते, इस स्थिति के लिए हम स्वयं ही जिम्मेदार हैं। संस्थायें खाली पड़ी हैं। वृद्ध ही वृद्ध नजर आते हैं। आपसी झगड़े और मुकदमेबाजी में समाज का बहुमूल्य धन बर्बाद किया जाता है। कोई रचनात्मक कार्य होता नहीं दिखता। ऐसा तो आर्यों का चरित्र नहीं होता। रही बात समाज की तो सिर्फ नाम का ही समाज बचा है। काम सब असामजिक हो गए हैं।

इस प्रकार के उद्‌गार ऐसा नहीं है कि पहले नहीं कहे गए हों। समय-समय पर इस तरह के लेख व विचार पढ़ने और सुनने को मिलते रहते हैं। लेकिन क्या करें आर्य समाज में हालात ही ऐसे हो गये हैं कि आत्मा दुखती है। कहते हैं, महात्मा गौतमबुद्ध के बाद लगभग पाँच सौ वर्षों में ही बौद्ध धर्म नष्ट हो गया और आज उसके अवशेष ही शेष हैं । परन्तु आर्य समाज लगभग सवा सौ साल में ही अपने पतन के चिह्न प्रकट कर रहा है तो पाँच सौ वर्ष बाद क्या स्थिति होगी? रुदन न करें तो क्या करें। एक विधर्मी को शुद्ध करके आर्य बनाया जा सकता है पर एक पतित आर्य को हम कहाँ समायोजित करेंगे और वह बेचारा कहां जायेगा?अतः हम सभी भद्रजनों को मिलकर उक्त सभी बातों का विश्लेषण/मंथन करके फिर से नई योजनाओं का निर्माण करना चाहिए। सभी सामाजिक व राष्ट्रहित से जुड़े कार्यों में सहभागी होना चाहिए और एक नये कलेवर वाले आर्य समाज को विश्व के समक्ष रखने का प्रयास करना चाहिए ताकि वह पुराना गौरवमय उज्ज्वल आर्य समाज बन सके। इतिशम्

❑❑❑

- सीतावाड़ी रोड,केलवाड़ा तहसील शाहबाद, जिला बारां(राज.)

अत्यन्त आवश्यक एवं विनम्र निवेदन

प्रिय पाठकगण! श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश, उदयपुर के समस्त न्यासीगणों के आदेश व आप सदृश कई शुभचिन्तकों के बार-बार आग्रह के फलस्वरूप न्यास के मासिक मुखपत्र का जन्म 'सत्यार्थ-सन्देश' के रूप में हुआ (अब जिसका पंजीयन 'सत्यार्थ-सौरभ' नाम से हुआ है) अब तक इस पत्रिका के ६ अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं। सभी पाठकों तथा विद्वानों के पत्र हमें उत्साहित करते हैं। आशा है आपको भी पत्रिका अच्छी लगी होगी। आपके सुझावों का सदैव स्वागत रहेगा।

पत्रिकाओं के प्रारम्भ होने के पश्चात् दो बातों का ध्यान रखना पड़ता है -

(१) पत्रिका का स्तर किसी भी स्थिति में गिरने न पावे (२) पत्रिका अकाल मृत्यु को प्राप्त न हो जावे।

प्रथम की जिम्मेदारी हमारी है। कितना भी श्रम क्यों न करना पड़े पत्रिका के स्तर को हम गिरने नही देंगे। प्रगति की सम्भावना ही हमारी लक्ष्य होगी। द्वितीय स्थिति की आशंका को जड़मूल से नष्ट कर देना आपके हाथ में है। धनाभाव से ही यह स्थिति उत्पन्न होती है। आप सदस्य बनकर व बनाकर विशेष अनुदान देकर व दिलाकर इस कार्य में प्रबल सहायक बन पत्रिका को दीर्घायु बना सकते हैं। इसी अत्यन्त आवश्यक निवेदन व अनुरोध को प्रत्येक पाठक के समक्ष निवेदित कर रहे हैं। आप कृपया स्व श्रद्धा व सामर्थ्यानुसार इसके सदस्य बनने का श्रम करें ताकि पत्रिका आप तक अबाधित पहुँचती रहे। जिस आर्यसमाज/संस्था से आप संबद्ध हैं उसे तो अवश्य ही सदस्य बना सकते है क्योंकि संस्था स्तर पर १०० रु. वार्षिक अथवा १००० रु. आजीवन नगण्य है। आपके सहयोग की आशा ही नहीं पूरा विश्वास है।

कृपाकांक्षी (अशोक आर्य)

संरक्षक सदस्य ११००० रु.	आजीवन सदस्य १००० रु.	विशिष्ट सदस्य ५ वर्ष ४०० रु.	वार्षिक सदस्य १०० रु.

सतीश आर्य

यदि आज स्वामी दयानन्द सरस्वती जीवित होते तो?

महर्षि दयानन्द सरस्वती आदित्य ब्रह्मचारी थे। आदित्य ब्रह्मचारी के विषय में स्वामी जी सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में छान्दोग्योपनिषद् के प्रमाण से लिखते हैंः-

'उत्तम ब्रह्मचर्य ४८ वर्ष पर्यन्त का तीसरे प्रकार का होता है। जैसे ४८ अक्षर की जगती वैसे जो ४८ वर्ष पर्यन्त यथावत् ब्रह्मचर्य करता है उसके प्राण अनुकूल होकर सकल विद्याओं को ग्रहण करते हैं। आचार्य और माता पिता अपने सन्तानों को प्रथम वय में विद्या और गुणग्रहण के लिए तपस्वी करें और उसी का उपदेश करें और वे सन्तान आप ही आप अखण्डित ब्रह्मचर्य सेवन से तीसरे उत्तम ब्रह्मचर्य का सेवन करके पूर्ण अर्थात् ४०० वर्ष पर्यन्त आयु को बढ़ावें जैसे तुम भी बढ़ाओ।..'

स्वामी जी आजीवन ब्रह्मचारी रहे और यदि उन पर विष प्रयोग नहीं होते तो वे पूर्ण आयु अर्थात् ४०० वर्ष की आयु प्राप्त करते और हमारे अहोभाग्य से आज भी हमारे मध्य में उपस्थित होते और मानव समाज को अविद्या से दूर करते हुए 'संपूर्ण विश्व को आर्य बनाने के ' वेद के पावन आदेश का पालन कर रहे होते। हम यहाँ उस सौभाग्यपूर्ण स्थिति का चित्रण करने का प्रयास कर रहे हैं कि यदि स्वामी दयानन्द जी आज भी जीवित होते तो आर्य समाज, भारत तथा विश्व जनमानस के लिए किस प्रकार का कार्य कर रहे होते। उक्त चित्रण से पूर्व मैं स्वामी की विशेषताओं एवं उनकी बहुमुखी प्रतिभा को निम्न शब्दों में व्यक्त कर रहा हूँ-'वे आर्य समाज के संस्थापक, सत्यमानी, सत्यवक्ता, वेद और वेदानुकूल सत्यशास्त्रों के प्रबल पोषक, वेद,योग एवं यज्ञ के यथार्थ स्वरूप का बोध कराने वाले,सच्चे ईश्वर के उपासक, पूर्णतया विरक्त, ईश्वर की अटूट निष्ठा-युक्त ,राष्ट्रप्रेमी, स्वदेश भक्ति से ओतप्रोत, आदित्य ब्रह्मचारी, स्वअपराधियों के प्रति क्षमाशील, पातंजलि योग के प्रबल प्रतिपादक, योग की अन्तिम स्थिति असम्प्रज्ञातसमाधिनिष्ठ योगी, परमात्म साक्षात्कार किए हुए एवं परमात्मा की असीम अनुकम्पा से युक्त, जीवन-मुक्त, ब्रह्मा से जैमिनि पर्यन्त ऋषियों द्वारा प्रतिपादित वेदानुकूल ग्रन्थों के प्रचारक एवं तदानुसार लेखन कार्य में संलग्न, शास्त्रार्थ-शिरोमणि, शास्त्रार्थ-समर में वेद एवं धर्म विरोधियों का मान मर्दन करने वाले, अतुल्य शारीरिक बलधारी, सर्वस्व त्यागी, त्रैतवाद के आर्ष सिद्धान्त के प्रबल पोषक, गुरुकुल परम्परा के पोषक एवं आर्ष पाठविधि के अनुमोदक एवं प्रचारक, नारी शिक्षा एवं सम्मान के समर्थक, अनार्ष ग्रन्थों एवं वेद तथा ऋषि निन्दक ग्रन्थों के प्रबल विरोधी, दयावान्......थे।' स्वामी जी द्वारा हो सकने वाले कार्यों को सामाजिक एवं धार्मिक वर्गों में कहा जा सकता है-

सामाजिक जीवन के क्षेत्र में-

१. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम स्वरूप का कुछ और ही होता। वे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी नेता होते और न भारत का विभाजन होता और न ही आज तक कश्मीर पर दोमुहीं नीति होती। उनके नेतृत्व में भारत को सन् १६४७ से पहले ही स्वतंत्रता प्राप्त हो जाती।

२. भारत का संविधान इस रूप में न होता। वे राष्ट्रधर्म को स्पष्ट रूप से प्रतिपादित करते और एक देश, एक भाषा,एक धर्म और सभी के लिए समान हितकारी नीतियों को बल देते जिससे सभी भारतीय समान रूप से लाभान्वित होते। अंग्रेजी शासन के दौरान भी अंग्रेज शासकों द्वारा उनकी अवहेलना न हो सकी, ऐसे में हम यह कह सकते हैं कि सिद्धान्तहीन एवं मौकापरस्त देशी नेताओं का वे निश्चयपूर्वक मानव मात्र के हितार्थ मार्गदर्शन करते।

३. वे देश में प्रचलित सभी प्रकार की सामाजिक बुराईयों का विरोध करते और सामाजिक सर्वहितकारी नियमों को ही प्रचारित और प्रसारित करते।

धर्म के क्षेत्र में-

१. भारत धार्मिक एवं बौद्धिक खेत्र में आज भी विश्व गुरु होता। वे भारत के महाभारत कालीन गौरव को पुनः स्थापित करने में सफल रहते।

२. वे चारों वेदों के यथार्थ स्वरूप को समाने रखते। वेदों के विस्तृत भाष्य से हम सब ज्ञान प्राप्त कर रहे होते। वेदों के बाद वे पूरे आर्ष साहित्य और ऋषि प्रणीत ब्राह्मण ग्रन्थों, उपवेद, शिक्षा, उपनिषदों, छः दर्शनों एवं कर्मकाण्ड के ग्रन्थों पर प्रमाणपूर्वक भाष्य करते।

३. वे शास्त्रार्थ शिरोमणि थे। आज भी भारत में शास्त्रार्थों का युग होता। उनके सामने वेदविरोधी, सत्यविरोधी, मतालम्बी शास्त्रार्थों में परास्त होकर अपनी दुकानदारी को बन्द करने पर मजबूर होते। जनता सत्य का स्वरूप जानकार अपने लिए कल्याण का मार्ग अपनाने में सफल रहती।

४. आज आर्य समाज में भाई-भतीजा वाद, क्षेत्रवाद, वर्गवाद आदि न जाने क्या क्या चल रहा है। स्वामी जी इस प्रकार की किसी भी गतिविधि को कदापि स्वीकार नहीं करते। ऐसे किसी भी व्यक्ति के लिए आर्य समाज के द्वार कभी नहीं खुलते।

५. आज मासिक शुल्क, दान एवं अपने स्वार्थों की पूर्ति यथा समाज के पदों पर कब्जा बनाये रखने हेतु आर्य समाज का सदस्य बनाया जाता है। जबकि महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की सदस्यता हेतु आर्य समाज के नियम पालन को अनिवार्य माना है। उपरोक्त प्रकार से बने सदस्य अपने पूर्वाग्रहों के कारण आर्यसमाज के सिद्धान्तों में मनमाने परिवर्तन कराना चाहते हैं। और तो और बहुमत के आधार पर ऐसे व्यक्ति अधिकारी भी बन जाते हैं। ऐसी स्थानीय आर्य समाजों एवं उनके अधिकारियों से नियम पालन की आशा करना व्यर्थ होता है। ऐसी आर्य समाजों एवं सभाओं की देखा-देखी ही अन्य समाजें भी सिद्धान्तों से समझौता कर रही है।

स्वामी जी ऐसे किसी सिद्धान्तहीन व्यक्ति को सदस्य ही नहीं बनने देते, धन आदि के लिए तो कदापि नहीं। यदि ऐसे लोग सदस्य बन भी जाते तो या तो वे अपने आपको नियमों के अनुसार बदलते, नहीं तो उनकी सदस्यता ही समाप्त कर दी जाती।

६.स्वामी जी ईश्वर के स्थान पर व्यक्तिपूजा, मूर्तिपूजा के सर्वथा विरुद्ध थे। आज के पौराणिक मन्दिरों में साईं बाबा की मूर्तियाँ स्थापित हो गई हैं, लोग साई संध्या का आयोजन कर धार्मिकता का प्रदर्शन कर रहे हैं। स्वामी जी ऐसे सभी कृत्यों का सर्वथा विरोध करते तथा सत्य ईश्वर का ही प्रचार करते।

७. वर्तमान काल में फलित ज्योतिष का बोलबाला अधिक हो रहा है। भवन निर्माण हेतु 'वास्तु कला' तथा काल्पनिक 'वास्तु पुरुष' का संदर्भ दिया जा रहा है और कहा जा रहा है कि हमारे प्राचीन ग्रन्थों में 'वास्तु' का ज्ञान है। मेरे द्वारा पूछने पर ऐसे किसी प्राचीन प्रामाणिक ग्रन्थ का संदर्भ देना तो दूर, ग्रन्थ

का नाम तक नहीं बताया गया। इसी प्रकार चीनी मान्यता के अनुसार 'फेंग-शुई' आदि का भी प्रचार हो रहा है। इस सब से शास्त्रों का ज्ञान न रखने वाले, अन्धविश्वासी जनमानस को मूर्ख बनाकर अपने स्वार्थ पूरे किये जा रहे हैं। स्वामी जी इस प्रकार की गतिविधियों एवं आधारहीन मान्यताओं का जबरदस्त विरोध करते और जनता को गुमराह होने से बचाते।

८. उन्होंने, वेद, यज्ञ और योग के वास्तविक स्वरूप को हम सबके सामने रखा था। अतः इस क्षेत्र में आई वर्तमान काल में कुरीतियों का वे विरोध करते। जो कि निम्न प्रकार से होता-

वेद के नाम पर-

क. वेद का सम्पूर्ण भाष्य उनके द्वारा हो जाने से वेद के नाम पर मनमाना अर्थ करने की कुरीति तो समाप्त ही हो गई होती। फिर जो विद्वान् स्वार्थपूर्वक ऐसा करते, तो स्वामी जी शास्त्रार्थ द्वारा उसका निराकरण कर जनता को सत्य-असत्य का ज्ञान करवा देते।

यज्ञ के नाम पर

क. आज यज्ञों के नाम पर पाखण्ड को बढ़ावा मिल रहा है। वे यज्ञों के यथार्थ स्वरूप को ही प्रचारित करते।

ख.आज कल्पसूत्रों (ग्रह्यसूत्रों, श्रौतसूत्र, शुल्बसूत्र, एवं धर्मसूत्र) का ज्ञान न होने से लोग मनमाने यज्ञ कर और करवा रहे हैं। वे कल्पसूत्रों की विस्तृत व्याख्या हमारे सामने रखते और यज्ञों के नाम पर होने वाली विकृतियों को दूर करते। वे दर्शपौर्णमास से लेकर अश्वमेध पर्यन्त यज्ञों का यथार्थ स्वरूप, श्रौतसूत्र के आधार पर हमारे सामने रखते।

ग.आज बहुकुण्डीय यज्ञों,चतुर्वेदपारायण आदि यज्ञों का प्रचार हो रहा है, जिनका कल्पसूत्रों एवं ब्राह्मण ग्रन्थों में वर्णन ही नहीं है। आज के विद्वान् सार्वदेशिक की धर्मार्य सभा में बैठकर बहुकुण्डीय यज्ञों को सिद्धान्त विरुद्ध बताकर भी उन्हें करते और करवाते हैं, आज के नेता एवं अन्य स्वयंभू नेता लोगों को अधिक एकत्र करने एवं शक्ति प्रदर्शन के नाम पर बहुकुण्डीय यज्ञों को अपना रहे हैं, अथवा समर्थन कर रहे हैं, एवं अन्य प्रकार के शास्त्रज्ञान से अनभिज्ञ विद्वान् भी देखा-देखी इस प्रकार के बहुकुण्डीय यज्ञों को कर और करवा रहे हैं।

यह दुःख के साथ कहना पड़ रहा है,ऐसे सभी विद्वानों एवं नेताओं का आर्य समाज में कोई स्थान नहीं होता। या तो उन्हें सत्य को अपना कर इस प्रकार की सिद्धान्तहीनता से दूर रहना होता, अन्यथा महर्षि दयानन्द उन्हें आर्य समाज की सदस्यता से ही निष्कासित कर देते।

योग के नाम पर

स्वामी जी स्वयं एक बहुत बड़े सिद्ध योगी थे। उन्होंने अपने जीवन के छः वर्ष एकान्तवास करते हुए केवल मात्र पातंजल योग एवं हठयोग की शिक्षा प्राप्त की थी। वे पातंजल योग को उचित मानते थे और इसी को आजीवन अपनाये भी रहे। **हठयोग को उचित नहीं मानते थे**। इससे किसी प्रकार की सिद्धि को वे नहीं मानते थे और उसे छोड़ने का भी निर्देश कर दिया था।

स्वामी जी ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के उपासना विषय में प्राणायाम के संबंध में निम्न वाक्य लिखते हैं-'बालबुद्धिभिरङ्.ल्यङ्ष्ठाभ्यां नासिकाछिद्रमवरुध्य यः प्राणायामः क्रियते स खलु शिष्टैस्त्याज्य एवास्ति।'' अर्थात् बालबुद्धि अर्थात् प्राणायाम की क्रिया और योगविद्या में अनभिज्ञ लोग अंगुलियों और अंगूठे से नासिका छिद्रों को बन्द करके जो प्राणायाम किया करते हैं, वह शिष्ट विद्वानों के लिए त्याज्य-छोड़ देने योग्य है। अब विचार कर लेवे कि इस प्रकार से प्राणायाम करने वाले शिष्ट नहीं, तो करवाने वाले को क्या कहा जाये?

क. आज योग के नाम पर तथाकथित योगी मात्र आसन और प्राणायामों को ही कर-करवा रहे हैं, और अपने आपको योगी कह और कहलवा रहे हैं। और इन आसन और प्राणायामों में भी बहुसंख्य वे हैं,जो कि हठयोग प्रदीपिका में कथित हैं। राजयोग और पातंजल योग के नाम पर हठयोग द्वारा प्रतिपादित आसन और प्राणायामों का प्रचार हो रहा है। इनका प्रचार आधुनिक संचार माध्यमों यथा टेलीविजन, मीडिया द्वारा भी किया जा रहा है, जिसका विभिन्न मतावलम्बी,जो कि पातंजल योग से सर्वथा अनभिज्ञ हैं, धन बल से सहयोग कर रहे हैं।

ख आज योगी होने की पदवी, किसी आसन विशेष को करने की योग्यता पर आधारित हो गई है क्योंकि लोगों ने पातंजल सूत्रों एवं व्यासभाष्य का पढ़ना-पढ़ाना छोड़ दिया है। जबकि योग तो चित्तवृत्ति निरोध का नाम है और ये तथाकथित योगी अपनी चित्त की वृत्तियों को संसाराभिमुख किये हुए हैं। सांसारिक ऐषणाओं -लोकैषणा, वित्तैषणा से त्रस्त, वैराग्यरहित ऐसे लोगों के लिए वृत्ति-निरोध तो स्वप्न के समान है। परन्तु फिर भी योगी!!

स्वामी जी ऐसे सभी स्वयंभू योगियों का मानमर्दन करते और योग के यथार्थ स्वरूप-पातंजल योग को ही प्रचारित करते तथा मानव मात्र के लिए मोक्षपथ का द्वार खोलते।

आर्यों! उनकी बहुमुखी प्रतिभा के आधार पर बहुत कुछ कहा जा सकता है। देश के दूसरे सम्प्रदायों को तो छोड़ें, उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज के सदस्यों का तो यह दायित्व बनता है कि वे सत्य सिद्धान्तों को जानें और उन्हें अपनायें । आर्य समाज का यह सिद्धान्त है कि '**सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए**।' परन्तु कुछ तथाकथित आर्य समाजी विद्वान् एवं नेता या तो सत्य को जानते ही नहीं या फिर सत्य को जानते हुए भी, लोभ और स्वार्थवश सत्य को अपनाने में तैयार नहीं हैं। स्वामी जी सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में स्पष्ट रूप से लिखते हैं'क्योंकि विद्वानों के विरोध से अविद्वानों में विरोध बढ़कर अनेकविध दुःख की वृद्धि और सुख की हानि होती है। इस हानि ने जो कि स्वार्थी मनुष्यों को प्रिय है,सब मनुष्यों का दुःखसागर में डुबो दिया है।' अतः यह प्रार्थना है कि सभी विद्वान् एवं नेता, स्वार्थों को त्याग कर, सत्य पर एकमत होकर सत्य का ही प्रचार और प्रसार करें जिससे आर्य समाजों में ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित सत्य सिद्धान्तों का ही पालन हो और ये सिद्धान्त आने वाली पीढ़ियों के लिए भी इसी प्रकार सुरक्षित रहें।

एक निवेदन औरः- हमारी सभाएँ एवं अधिकारी, सत्य सिद्धान्तों एवं शास्त्रज्ञान से विरुद्ध चलने वाले तथाकथित विद्वानों का विभिन्न समारोहों में सत्कार एवं सम्मान करना भी बन्द करें । ऐसा होते रहने से सिद्धान्तहीनता का अप्रत्यक्ष अनुमोदन है, और उस अनुमोदित अधर्म के दोषी हम भी होंगे। जब तक ऐसा होगा,तब तक लोग भ्रमित रहेंगे और सत्यान्वेषी आर्यजनों का उत्साहवर्द्धन नहीं होगा।

- निवेदक सतीश आर्य, १५ पॉकेट १, पश्चिम पुरी, नई दिल्ली ११००६३

(अगर ऋषि दयानन्द होते तो अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में पाठान्तर न होने देते क्योंकि वे स्वयं इस कालजयी कृति के रचयिता थे। और इस संबंध में दुराग्रह करने वालों को उचित शिक्षा भी करते इसके अतिरिक्त स्वयं उनके प्रति प्रश्न उठाने वाले शिष्यों के भ्रम का भी निवारण कर देते - सम्पादक।)

जन्मोत्सव
के शुभअवसर
हार्दिक शुभकामनाएं
डॉ. सुखदेव चन्द्र सोनी
एवं
उनकी सहधर्मिणी श्रीमती सरोज सोनी

उन सबको (माता-पितादि) अत्यन्त श्रद्धा से उत्तम अन्न, वस्त्र, सुन्दर यान आदि देकर अच्छे प्रकार जो तृप्त करना अर्थात् जिस-जिस कर्म से उनका आत्मा तृप्त और शरीर स्वस्थ रहै, उस-उस कर्म से प्रीतिपूर्वक उनकी सेवा करनी, वह 'श्राद्ध' और 'तर्पण' कहाता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती